ब्रह्माकुमारी मत दर्पण

ब्र. जगदीशचन्द्र विद्यार्थी

स्रोत
'सार्वदेशिक' पत्रिका
(जनवरी से जून, 1963)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली

धर्म की परिभाषा करते हुए महर्षि कणाद ने कहा है—

यतो अभ्युदयः निः श्रेयस सिद्धि स धर्मः ॥

(वैशेषिक दर्शन १।१।२)

जिन कार्यों के अनुष्ठान से मनुष्य को इहलौकिक सुख और पारलौकिक आनन्द अर्थात् मुक्ति की प्राप्ति हो वही धर्म है।

परन्तु काल-कुठार के कुचक से लोग धर्म के वास्तविक अर्थ को भूल गये। परिणामस्वरूप धर्म के नाम पर लोगों को फांसी पर चढ़ाया गया, तोपों से उड़ाया गया और विष के प्याले पिलाये गये। इस धर्म के नाम पर छल, कपट और पाखण्ड हुए। धर्म के नाम पर चोरी हुई, जुआ खेला गया बढ़ी और खूब बढ़ी। झुण्ड के झुण्ड लोग कथा सुनने आते। सम्भव है, हीरालाल का खास लक्ष्य प्रथम पाप करने का न रहा हो, पर जब उसने देखा कि स्त्रियां विशेष भाव से कथा सुनने आती हैं और चाहे जिस समय भी आ सकती हैं, तो उसने कथा का विस्तार बढ़ाया और दिन में कई बार कथा होने लगी और फिर रास लीला भी आरम्भ कर दी गई। रासलीला में हीरालाल स्वयं ही कृष्ण बनता था। बड़े-बड़े सेठ अपनी स्त्रियों को हीरालाल की सेवा में भेजने लगे। अच्छी से अच्छी स्त्री जब उसकी सेवा में हर समय तत्पर रहने लगी तो हीरालाल बच न सका। उसकी छिपी हुई पाप वासना जागी और उसने छिपी रास लीला शुरू की। इसमें खास-खास स्त्रियां ही उसके साथ होती

ब्रह्माकुमारी मत दर्पण

[ब्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी प्रभाकर]

और व्यभिचार तक भी किया गया। धर्म की दुहाई देकर नये २ मतों और पन्थों का निर्माण हुआ और इनके संस्थापकों ने अनेक भले घर की बहू और बेटियों के चरित्र तथा सतीत्व का सत्यानाश किया।

धर्म की आड़ में कलकत्ते के गोविन्द भवन के व्यभिचार शिरोमणि ४२० हीरालाल गोयनका ने जो कुकर्म किये थे, हम इस प्रसंग में उस काण्ड के वर्णन का लोभ संवरण नहीं कर सकते।

" [आरम्भ में] हीरालाल ने [गोविन्द भवन में] गीता की कथा बांचनी आरम्भ की और धीरे-धीरे मारवाड़ी अखबारों में गीता विषयक कुछ उपदेश लिखने शुरू किये। साथ ही साथ उसने यह आन्दोलन भी उठाया कि मारवाड़ी स्त्रियां मुसलमानों के पास अपने बच्चे आदि फुंकवाने न जायें, बल्कि मन्दिर में श्रीकृष्ण की आराधना करें। भगवान् सब कुछ करेंगे। मारवाड़ियों की श्रद्धा उस पर थीं। और फिर तो बहुत सुभीते से पाप लीला चली। सास अपनी विधवा बहुओं को श्रीकृष्ण का प्रसाद पाने के लिये वहां लाती और प्रसाद मिल चुकने पर साथ ले जातीं। हीरालाल के एक मित्र कहते थे कि उसे इतनी बार स्त्रियों से संग करना पड़ा कि आखिर वह घृणित रोगी हुआ, और बहुत रुपया खर्च करके उसने कुश्ते आदि खाकर अपने शरीर को उस लीला के योग्य बनाये रक्खा।"

('चान्द' का मारवाड़ी अङ्क नवम्बर १९२९)

ओम् मण्डली की स्थापना

हीरालाल की भांति खूबचन्द कृपलानी नामक एक अवकाश प्राप्त व्यक्ति ने अपनी काम वासनाओं को शान्त करने के लिए ओम् मण्डली नाम से एक

संस्था की स्थापना की। यही खूबचन्द अब दादा लेखराज के नाम से प्रसिद्ध हैं। सब से पूर्व दादा लेखराज ने कलकत्ता की एक विधवा माया देवी का अपहरण किया। कलयुगी कृष्ण ने उसे खूब सैर सपाटे कराये, खानेको उत्तम पदार्थ दिये, पहनने के लिये सुन्दर वस्त्र। इस प्रकार माया देवी का मन अपनी ओर आकर्षित कर लिया। अब माया देवी इनका प्रचार करने लगी। ये हमारे भगवान् हैं हम इनकी गोपियां हैं। परन्तु असत्य कहां तक छिप सकता है? इलाहाबाद के एक साप्ताहिक ने इनकी पोल खोल कर उसे नंगा कर दिया। १९३७ में लाहौर में श्री रफी खां पी० सी० एस० की कोर्ट में इन पर मुकदमा चला। माया देवी को भी कोर्ट में आना पड़ा। बयान देने से पूर्व जब माया देवी को धर्म की कसम खिलाई गई तो वह कांप गई और उसने सारा भण्डा फोड़ दिया। उसने कहा—

'हमारे गुरुजी हमें स्वयं कहते हैं कि तुम जनता में जाकर कहो कि मैं गोपी हूँ और ये भगवान् कृष्ण हैं। न्यायाधीश महोदय मैं बड़ी पापिन हूँ। मैंने कितनी ही कुंवारी लड़कियों को गुमराह करने का प्रयत्न किया, कितनी माताओं से उनके नन्हें पुत्रोंको तिलांजलि दिलाने का प्रयास किया। कितनी बहनों को पति सेवा से रोका—मैं बड़ी अपराधिनी हूं।"

(आर्य जगत् जालन्धर २३ जुलाई १९६१)

कलयुगी कृष्ण ने अदालत से क्षमा याचना की और भाग गये।

१३ अगस्त १९४० को इन्होंने बिहार प्रान्त के एक छोटे से ग्राम में डेरे डाल दिये। चेले आने लगे। चेलियां भी क्यों पीछे रहतीं। अन्त में एक दिन कलयुगी कृष्ण एक बूढ़े हरिजन की युवा पत्नी धनियां को लेकर भाग खड़े हुए। फिर मुकदमा चला। धनियां के बयान लिये गये। उसने कहा— "इन गुरु महाराज ने हमें कहा था कि आपका पति मैं हूं, मुझे ब्रह्मा ने आपके लिये भेजा है।"

इसी प्रकार नाना विधि अनैतिक कुकर्म और व्यभिचार करते हुए दादा लेखराज हैदराबाद (सिंध) में जम गये। यहां भी ओम् मण्डली के काले कारनामों और दादा लेखराज के स्वयं कृष्ण बन कर और मण्डल की देवियों को गोपिकाएं बना कर रास लीला की कीड़ाएं और उसकी ओट में होने वाले व्यभिचार को देख कर प्रसिद्ध लोक-सेवक साधु टी० एल० वास्वानी मैदान में कूदे। उन्होंने ओम् मण्डली के कार्यालय पर धरना दिया और इस कार्य में उन्हें जेल भी जाना पड़ा।

साधु टी० एल० वास्वानी के कार्यक्षेत्र में कूदने से एक तहलका मच गया। ओम् मण्डली की अनैतिक कार्यवाहियों से धार्मिक जनता में खलबली मच गई। यहां भी इन पर मुकदमा चला। इस सम्बन्ध में हिन्दी की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका सरस्वती का निम्न उद्धरण जो पटना के 'योगी' पत्र से उद्धृत किया गया था पढ़ने योग्य है—

'ओम् मण्डली पर पिकेटिंग शुरू कर दी है। नतीजा यह हुआ है कि सी० पी० सी० की १०७वीं धारा के अनुसार सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत में पिकेटिंग करने वालों के अलावा ओम् मण्डली के संस्थापक और चार अन्य सदस्यों पर मुकदमा चल रहा है।"

(सरस्वती भाग ३९ संख्या खण्ड ६१ मई १९३८)

पुरानी शराब नई बोतलों में

कांग्रेसी नेताओं की अदूरदर्शिता और भारत के दुर्भाग्य से १९४७ में भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान का निर्माण हुआ। विभाजन के पश्चात् भी इस बूढ़े कृष्ण के द्वार पर लगभग एक सहस्र गोपियां विद्यमान थीं। ये सब कराची से जहाज में बैठकर बम्बई पहुँची। अब अवस्था बदल चुकी। बहुत सी देवियों को तो समाज ने स्वीकार कर लिया और उनका विवाह हो गया। बहुत सी भाग गईं और अन्यत्र जाकर घर बसा लिया परन्तु २५०-३०० अब भी बच रहीं जिनका डेरा भूतपूर्व कलयुगी कृष्ण और वर्तमान ब्रह्मा के द्वार पर

ही था।

अब ब्रह्मा जी को इन गोपियों के बसाने की चिन्ता हुई अतः दादा लेखराज ने आबू पर्वत पर पोकरान हाऊस में अपने डेरे डाल दिये और ओम् मण्डली के नाम के स्थान पर इसका नाम 'ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय" रक्खा गया।

दस वर्ष तक यह संस्था चुपचाप अपना कार्य करती रही। इस समय इस संस्था की लगभग ४० शाखाएं भिन्न भिन्न नगरों में कार्यकर रही हैं। इस संस्था की एक विशेषता यह है कि सब कार्य स्त्रियों के ही हाथों में होता है। प्रत्येक शाखा की मुख्य अध्यक्षता और प्रचारिका भी स्त्री ही होती हैं।

अब इस संस्था का नाम ब्रह्माकुमारी प्रसिद्ध है। संस्था के सदस्यों को संस्था के संस्थापक त्रिमूर्ति ब्रह्मा के प्रति आत्म समर्पण करना पड़ता है अतः समस्त साधक एवं साधिकाएं प्रचारक एवं प्रचारिकाएं एवं ब्रह्माकुमारी कहलाती हैं। प्रचारिकाएं यथा सम्भव कुमारी होती हैं। हां छिप कर चाहे कुछ भी करती रहें। विवाहित स्त्रियां अपने पतियों को छोड़ कर अथवा उनसे छोड़ी जाकर इस सम्प्रदाय में साधिकाएं बन सकती हैं तथा ये भी ब्रह्माकुमारी कहलाती हैं। पुरुष चाहे विवाहित हों अथवा अविवाहित वे ब्रह्माकुमार ही कहलाते हैं।

प्रवर्तक

जैसा पूर्व कहा जा चुका है इस संस्था के प्रवर्तक दादा लेखराज हैं। दादा लेखराज टूटी फूटी हिन्दी और साधारण अंग्रेजी या सिन्धी के अतिरिक्त संस्कृत तथा अन्य विद्याओं से सर्वथा शून्य हैं। इतिहास और भूगोल तो इन्होंने देखा तक नहीं पढ़ने की बात तो दूर रही। इसका एक मोटा उदाहरण प्रस्तुत है—

भारतीय ज्योतिष विद्या के अनुसार चतुर्युगी की आयु ४३ लाख २० हजार वर्ष है। सतयुग की आयु १७ लाख २८ हजार वर्ष, त्रेता की १२ लाख ९६ हजार वर्ष, द्वापर की ८ लाख ६४ हजार वर्ष और कलियुग की ४ लाख ३२ हजार वर्ष। परन्तु दादा लेखराज ने कल्प की आयु केवल ५००० वर्ष मानी है। इसमें सतयुग, त्रेता द्वापर और कलियुग प्रत्येक १२५० वर्ष का है। कैसा सीधा साधा हिसाब है प्रत्येक युग १२५० वर्ष का। न हिसाब रखने का कष्ट, न गिनने का कष्ट, न लेता भूले न देता भूले। इसीलिये इस ज्ञान को सहज ज्ञान कहा जाता है।

दादा लेखराज आबू पर्वत से विज्ञप्तियों द्वारा समय समय पर अपने विचारों का प्रचार करते रहते हैं। इन विज्ञप्तियों को मुरली कहते हैं। इन विज्ञप्तियों को मुरली क्यों कहते हैं? इसका भी एक रहस्य है। आज दादा लेखराज ब्रह्मा बना हुआ है परन्तु विभाजन से पूर्व वह कृष्ण बना हुआ था और कृष्ण बन कर गोपियों के साथ खूब रास रचाये थे। पुराणों में श्री कृष्ण को मुरली धर कहा गया है। अतः दादा जी के पास भी मुरली होनी ही चाहिए।

दादा जी को दौरे पड़ते हैं। दादा जी के चेले समझते हैं कि वे समाधि में हैं। दौरे की अवस्था में दादा जी जो कुछ बड़बड़ाते हैं इसे अक्षरशः लिख लिया जाता है और इसे छाप कर समस्त केन्द्रों पर भेजा जाता है। वहां भी इसी बकवास के आधार पर भाषण दिए जाते हैं। यह मेरी कपोल कल्पना नहीं है। अपनी इस बात के लिए मैं दादा लेखराज जी के एक भक्त के उद्‌गार उद्धृत करता हूं।

"सुबह सवेरे अमृत बेले जो भाषण पिता श्री करते वह लफ़्ज़ बलफ़्ज़* लिखकर उसकी नकलें उतार सब ईश्वरी सेवा संस्थाओं पर रोजाना बज़रिया डाक भेज दिया जाता था ताकि दूर दराज पर बैठे हुए ब्रह्माकुमार व कुमारियों को वह ईश्वरीय ज्ञान अमृत धारा पहुंच सके। जिसे वे खुद धारण

---

* शब्दशः

कर औरों को सुनाते रहें।"

(मेरा अनुभव उर्दू ले० जे० आर आनन्द पृष्ठ ६)

पाठकों की जानकारी के लिए इतना और लिख दूं कि जे०आर० आनन्द 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय वेस्टर्न एक्टेन्शन एरिया करोल बाग के सर्वेसर्वा हैं। अस्तु।

इन विज्ञप्तियों--मुरलियों की भाषा अति निम्न कोटि की अशुद्ध हिन्दी होती है। इस भाषा से भी यह सहज ही पता लग जाता है कि दादा लेखराज का ज्ञान अति साधारण है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, भूगोल, खगोल, ज्योतिष विज्ञान, गणित आदि की तो बात ही क्या जिस गीता के सम्बन्ध में वे कहते हैं कि इसका ज्ञान कृष्ण ने नहीं मैंने दिया था उसका भी इन्हें लेश मात्र भी ज्ञान नहीं है। अपने इस अज्ञान के कारण ही आपने अपने सम्प्रदाय को आर्य, धर्म और संस्कृति से पृथक रक्खा है। राधा स्वामी और हंसदेव आदि मतों की भांति आपने आर्ष पथ को छोड़ कर अनार्य मार्ग को ग्रहण किया है।

संगठन

इस मत के प्रवर्तक दादा लेखराज अपने आप को त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते हैं तथा अपने आपको परमात्मा का अवतार घोषित करते हैं। वेद दर्शन, उपनिषद् और गीता आदि ग्रन्थों में ईश्वर का निज नाम ओ३म् बताया गया है। उस ओ३म् की उपासना का वर्णन किया गया है। उसके ध्यान और जप का विधान बतलाया गया है परन्तु दादा लेखराज ओ३म् जैसे श्रेष्ठ नाम को तिलांजलि देकर परमात्मा को शिव नाम से पुकारते हैं। निस्सन्देह शिव ईश्वर का वाचक हो सकता है परन्तु शिव कहते ही वे अर्थ ध्यान में नहीं आते जो ओ३म् के उच्चारण से ध्यान में आते हैं।

यदि इस संस्था के संगठन पर ध्यान दिया जाये तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि यह सारा संगठन ईसाइयों का अन्धानुकरण मात्र है। ईसाइयों की Trinity त्रैतवाद में पवित्र पिता, पवित्र पुत्र और पवित्रात्मा इन तीन का समावेश है। ब्रह्माकुमारी संस्था में भी दादा लेखराज को परमपिता कहा जाता है। प्रत्येक शाखा का प्रमुख पिता और प्रचारिका श्रद्धामाता अथवा देवता बहन कहलाती है। यह भी ईसाइयों के रेवरेण्ड फादर, रेवरेण्ड मदर और होली सिस्टर का अनुकरण है।

ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुमारियां परस्पर भाई-बहन कहलाती हैं जैसे ईसाई संगठन में प्रचारक और प्रचारिकाएं ब्रदर्स एवं सिस्टर्स के नाम से पुकारी जाती हैं। पति और पत्नी भी ब्राह्मकुमारी चक्र में बहन और भाई शब्द का प्रयोग करते हैं। वैदिक मर्यादा के अनुसार पति को भाई और पत्नी को बहन कहना सर्वथा अनुचित है। इनका यह व्यवहार वाम मार्ग के भैरवी चक्र के समान अत्यन्त दूषित है।

इस पन्थ का बाबा आदम बड़ा ही निराला है। दादा जी ब्रह्माकुमारियों के साथ आलिंगन करते, उनके मुख चूमते और उनका अधरामृतपान करते हैं। दादा लेखराज और इस संस्था के सभी सदस्य इस कार्य को पवित्र एवं पाप शून्य मानते हैं। ब्रह्माकुमारियां समझती हैं कि ये तो हमारे परम पिता हैं और अपनी पुत्रियों के साथ पितृतुल्य प्रेममात्र करते हैं। इस सम्बन्ध में निम्न उद्धरण पढ़ने योग्य है—

"श्री पिता श्री के तन से बाबा ब्रह्मा और दादा ज्योतिर्लिंगम शिव दोनों से रूहानी× मुलाकात❀ हुई। उनकी आंखों में एक अजीब कशिश थी। देखते ही देखते प्रेम के सागर परम पिता ने ऐसी खेंच डाली कि मेरी आंखों में प्रेम के आंसू आ गये। मैं रुक न सका और लपक कर इस रूहानी बाप की गोद में चला गया। मैं इस वक्त अपने आपको एक नन्हा सा बच्चा समझ रहा था। बाबा ने बहुत प्यार किया।" (मेरा अनुभव पृष्ठ ८)

❀

× आध्यात्मिक ❀ भेंट (क्रमशः)

पुरुषों की भान्ति स्त्रियां भी गोद में बैठती हैं।

इस सम्बन्ध में श्री जे० आर० आनन्द जी से सुनिये—

"इस संस्था में आने वाले प्रत्येक ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारियाँ अपने आपको दादाजी की गोद का बच्चा समझते हैं। अपनी मर्जी से ब्रह्मा कुमारियाँ दादा जी की गोद में नहीं जातीं, वरन्, उनके तेज से प्रभावित होकर उनकी ओर चली जाती हैं। (हिन्दी टाइम्स साप्ताहिक १५ जुलाई १९६१ पृष्ठ १४)।

इतना ही नहीं ब्रह्माकुमार भी ब्रह्माकुमारियों का आलिंगन करते हैं। ब्रह्माकुमारियों को ही क्यों वे तो मातेश्वरी तक को नहीं छोड़ते। में श्रद्धा माता अथवा देवता बहन आदि कुमारियां अपने हाथ से लड्डू पेड़ा आदि वितरण करती हैं और इन के हाथ से प्रसाद पाकर भक्त-लोग अपने को कृतकृत्य समझते हैं।

साधना

भारतवर्ष अध्यात्म प्रधान देश है। यहाँ की जनता को योग की बड़ी भूख है। साधारण जनता योगविधि को ठीक रूप से नहीं जानती अतः जहाँ योग की बात सुनी वहाँ पहुँच जाती है और फिर जाल में फंस जाती है। लोगों की इसी दुर्बलता का लाभ उठा कर इस सम्प्रदाय ने भी योग के चक्र में लोगों को फंसाया है।

प्रतिदिन प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त्त में और रात्रि

ब्रह्माकुमारी मत दर्पण

[ब्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी]

गतांक से आगे

लीजिये प्रमाण प्रस्तुत है—

"जब मैंने मातेश्वरी का आलिंगन किया तो मुझे किसी तरह का रोमाञ्च नहीं हुआ।"

(हिन्दी टाइम्स १५ जुलाई १९६१ पृष्ठ १४)

परपुरुषों एवं स्त्रियों का परस्पर चुम्बन एवं आलिंगन वैदिक मर्यादा के अनुसार सर्वथा घृणित दूषित लज्जाजनक एवं निन्दनीय है। पर नारी का स्पर्श पाप है और चुम्बन तो निश्चितरूप से व्यभिचार ही है। यह कामुकता का द्योतक है और आयुर्वेदिक दृष्टि से आयु को क्षीण करने वाला है।

ईसाइयों की भान्ति इस सम्प्रदाय में प्रसाद भी वितरण किया जाता है। इसके सत्संगों में इनके योग का पाखण्ड चलता है। जिस समय ये लोग योग में बैठते हैं उस समय ग्रामोफोन पर अत्यन्त अश्लील और निम्नकोटि के रिकार्ड बजाये जाते हैं। कमरे में लाल प्रकाश होता है—ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ मुख्य प्रचारिका की आँखों से आँख लड़ाते हैं। प्रचारिका एक विशेष प्रकार का सुर्मा आँखों में लगाती हैं जो इसको सम्मोहन क्रिया में सहायक होता है। सात दिन की साधना में ही ये साधकों को ब्रह्म साक्षात्कार करा देती हैं ऐसी इनकी मान्यता है। परन्तु इन की यह घोषणा सर्वथा

मिथ्या है, केवल पाखण्ड और ढोंग है। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियोंकी तो बात ही क्या अभी स्वयं दादा लेख राज को भी ब्रह्मदर्शन नहीं हुए। यदि उन्हें ईश्वर दर्शन हो जाते तो जो पाखण्ड अनाचार, मिथ्याचार, ढोंग और पोपलीला वे चला रहे हैं इसे कभी न चलाते। वे तो स्वयं ही ब्रह्म बन बैठे हैं फिर दर्शन किस का?

हमारे शास्त्रकारों ने ध्यान का लक्षण इस प्रकार किया है—

ध्यानं निर्विषयं मनः। (साँख्य० ६। २५)

वृत्तरहित विषयरहित मन की अवस्था का नाम ध्यान है। जब तक नेत्र अपने व्यापार में लगे रहेंगे और अपने विषय रूप में उलझे रहेंगे तब तक सात दिन की तो बात ही क्या सात जन्म में भी योग की सिद्धि असम्भव है। योग साधन के सम्बन्ध में किसी सन्त ने ठीक ही कहा है—

आँख कान मुख मून्द के नाम निरंजन लेय।
अंदर के पट तब खुलें जब बाहर के पट देय॥

मन को विषयों से हटाकर आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार का सम्यक् दीर्घकाल तक और निरन्तर अभ्यास करने पर ही ध्यान योग की सिद्धि हो सकती है। न यमों का पालन, न नियमों का सेवन न आसन, न प्राणायाम, न प्रत्याहार, न धारणा, न ध्यान बस आँख लड़ाने से ही समाधि सिद्ध। यह योग नहीं योग का उपहास है। हाँ भोले भाले लोगों को यौन आकर्षण दिखाकर,सुन्दर स्त्रियों के जाल में फंसा कर अपने पन्थ में मिलाने का जाल यह निश्चित रूप से है।

मान्यताएं और सिद्धान्त

ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रारम्भिक जानकारी देकर अब हम इनकी मान्यताओं और सिद्धान्तों पर विचार करेंगे और देखेंगे कि इनकी मान्यताएं और सिद्धान्त कहाँ तक बुद्धि पर खरे उतरते हैं।

वेद आदि का सफाया

दादा लेखराज अपने आपको साक्षात् परमात्मा ही बतलाते हैं। अपने आपको परमात्मा सिद्ध करने के लिए आपने वेदादि शास्त्र और सभी प्राचीन सन्त महात्माओं का खण्डन कर दिया है। देखिये—

"अतः यदि मेरे परमात्मिक ज्ञान को स्पष्ट रीति समझना चाहते हो तथा मेरे साथ अव्यभिचारी एवं अनन्य योग रखना चाहते हो तो पहली बात यह धारण करो कि इन सभी वेदों, शास्त्रों, गुरुओं, महात्माओं आदि में भी आसक्ति या उनकी स्मृति का भी संन्यास करके, बुद्धि को एक मुझ सर्वज्ञ परमात्मा की ओर लगाओ स्वयं मुझ ही से शुद्ध पवित्र ज्ञानामृत लो।"

(सच्ची गीता पृष्ठ २३—२४)

समीक्षा—आपने न वेद पढ़े और न शास्त्र और न आपकी वेद शास्त्र आदि में गति है। जब तक लोग वेद और शास्त्रों की बातों को पढ़ते रहेंगे और अन्य सन्तों, ऋषि, मुनियों और आचार्यों के बताए सत्य मार्ग पर चलते रहेंगे तब तक इनके जाल में कोई क्यों फंसेगा अतः इन्होंने वेद आदि सब का ही सफाया कर दिया। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। बलिहारी है इस बुद्धि की। रही ज्ञानामृत लेने की बात जो स्वयं ही मूर्ख और अज्ञानी हो वह दूसरों को क्या ज्ञान दे सकता है। हाँ पर-स्त्रियों के साथ आलिंगन एवं चुम्बन की शिक्षा वहां से अवश्य ही मिल सकती है। लीजिये इनके ही ग्रन्थ में पढ़िये—

बिठा कर गोद में हम को बनाते वत्स सेते हैं जरा सी बात है।

(भगवान् आया है पृष्ठ ५०)

और लीजिये—

बनाने को हमें सच्चा समर्पण माँग लेते हैं।
हमें स्वीकार कर वे वस्तुतः सम्मान देते हैं॥
(वही पृष्ठ ५१)

ज्ञानामृत का एक और नमूना देखिये—

लोक लाज कुल मर्यादा का,
डुबा चले हम कूल किनारा।
हमको क्या फिर और चाहिये,
अगर पा सकें प्यार तुम्हारा॥
(वही पृष्ठ ६६)

इस पुस्तक से इस प्रकार के अनेक उद्धरण दिये जा सकते हैं परन्तु हम केवल एक उद्धरण और देकर इस प्रसंग को समाप्त करते हैं—

जितने भी निष्पाप—
सजनियाँ शिव ही उनका एक पिया है।
जिस को हम ने हाथ दिया है॥
हम ने शिव को हाथ दिया है।
हमने तुम को हाथ दिया है॥

क्या इसी का नाम ज्ञानामृत है? यदि यही ज्ञानामृत है तो विषामृत क्या होता है? यह दादा जी ने कहीं भी स्पष्ट नहीं किया है।

तर्क का भी सफाया

जिस प्रकार ईसाई और मुसलमानों के यहाँ मजहब में अकल का दखल नहीं है ठीक इसी प्रकार ब्रह्माकुमारी संस्था में भी तर्क एवं बुद्धि को ताला लगाने की शिक्षा दी जाती है—

ग्रन्थ प्रमाण न हम को भाते,
नहीं तर्क की बात सुहाती।
बीते युग की चीज-हुई जो,
वह तो कोई काम न आती॥
(भगवान् आया है पृष्ठ ६४)

एक अन्य स्थान पर लिखा है—

शास्त्रवाद यह सारा मिथ्या जाल।
अनुभव की है बात हमारी नहीं तर्क का जाल।
(पृष्ठ १५-१७)

समीक्षा—किसी भी निर्णय पर पहुंचने के लिए तर्क एक सुदृढ़ आधार है। महर्षि यास्क ने तो जीवित जागृत ऋषियों के अभाव में तर्क को ही ऋषि माना है। दादा लेखराज तर्क को ऋषि मानने लग जायें तो उनकी सारी पोल ही खुल जाये और दो दिन में सारी दुनियादारी ही चौपट हो जाये। अतः उन्होंने अपने सम्प्रदायवादियों को तर्क से दूर रहने का आदेश दिया है। स्वार्थी मनुष्य अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये क्या कुछ नहीं करता?

नवीन मत

एक ओर तो दादा लेखराज जी का यह दावा है कि कलियुग के अन्त में और सतयुग से पूर्व संगम युग में वह स्वयं ही ज्ञान देता है और संसार का सर्व प्राचीन धर्म आदि सनातन देवी देवता मत ही है परन्तु स्वयं ही अन्य स्थानों पर अपनी बात का खण्डन भी कर रहे हैं—

"स्पष्ट है कि जो ज्ञान मैं देता हूं, वह ज्ञान अवश्य ही मनुष्य आत्माओं द्वारा दिये हुए ज्ञान से अर्थात् शास्त्रों के ज्ञान से न्यारा है, वह ज्ञान अन्य कोई नहीं दे सकता।"

(सच्ची गीता पृष्ठ १४२)

इसी सम्बन्ध में एक अन्यप्रमाण भी देखिये-

अपना सब कुछ नयाँ निराला खानपान सम्मान
नई प्रीति की रीति निराली, नया ध्यान, नवज्ञान
(भगवान् आया है पृष्ठ २६)

समीक्षा—यह तो आपने अपने मुख से और वचनों से ही स्वीकार कर लिया कि आपका मत प्राचीन नहीं अपितु नवीन है और इसे चले हुए २५-३० वर्ष से भी अधिक भी नहीं हुए। साथ ही आप शास्त्रों को भी नहीं मानते। रही

आपके ज्ञान देने की बात यह मुझे भी स्वीकार करना पड़ेगा कि ऐसा भ्रष्ट, निकृष्ट एवं असत्य-ज्ञान कोई सदाचारी और भला मनुष्य दे ही कैसे सकता है ? लीजिए अपने उत्कृष्ट ज्ञान का एक उदाहरण देखिये—

सभी सजनियों का वह साजन जब आ मिलता भोला भाला।

यह संगम का संग निराला॥

(भगवान् आया है पृष्ठ ३५)

यह है अद्भुत ज्ञान अमृत ! ऐसा ज्ञान कोई लम्पट, धूर्त्त और कामी ही दे सकता है ऋषि मुनियों के बनाए शास्त्रों में ऐसा ज्ञान कैसे हो सकता है ?

अब हम इस संस्था के कुछ अति महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का वर्णन इनके ग्रन्थों के आधार पर करेंगे।

कल्प की आयु

"हर एक युग का समय १२५० वर्ष है और इस प्रकार कल्प की आयु कुल ५००० वर्ष है।"

(सच्ची गीता पृष्ठ १३८)

आगे आप पुनः लिखते हैं—

"वत्सो, जो लोग मनुष्य सृष्टि के कल्प की आयु करोड़ों वर्ष मानते हैं उन्हें चुनौति दो कि वह सृष्टि-चक्र अथवा कल्प वृक्ष जैसा कि मैंने आपको दिखाये और समझाये हैं बना कर दिखायें। केवल कहने से क्या ? उनके पास करोड़ों वर्ष का इतिहास आदि भी तो होना चाहिए और इतनी लम्बी आयु मानने के कारण तथा हिसाब किताब का ज्ञान भी तो होना ही चाहिए।" (सच्ची गीता पृष्ठ १३६)

अन्य मत जैसे मुसलमान, ईसाई, यहूदी आदि जो मनुष्यात्मा का ८४ लाख योनियों में पुनर्जन्म नहीं मानते वे कल्प की आयु भी करोड़ों वर्ष नहीं मानते। (सच्ची गीता पृष्ठ १३८)

समीक्षा—दादा लेखराज का यह कहना कि कल्प की आयु ५००० वर्ष है एक कपोल-कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यदि सृष्टि की आयु ५००० वर्ष ही है तो महाभारत युद्ध को हुए ५०६१ वर्ष हो गये अतः इस कल्प का अन्त होकर नया कल्प आरम्भ हो जाना चाहिए था। परन्तु सृष्टि की समाप्ति नहीं हुई। हम दादा जी से पूछना चाहते हैं यह कल्प लम्बा क्यों हो गया ? यदि किसी भी ब्रह्माकुमार या कुमारी में दमखम है तो उत्तर दें। वैदिक ज्योतिष के अनुसार अभी इस सृष्टि की आयु २ अरब वर्ष से भी अधिक शेष है।

आप की चुनौति हमें स्वीकार है। सृष्टि चक्र और कल्प वृक्ष का कपोल कल्पित चित्र तो कोई भी ड्राइंग मास्टर बना सकता है। जैसे आपने श्री गुलाब सिंह जी को आबू पर्वत पर बुलाकर उन से बनवाये थे मैं भी बनवा सकता हूं यह कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु ऐसा कपोल कल्पित वृक्ष या चक्र बनवा कर मैं लोगों को धोखा नहीं देना चाहता।

रही इतिहास की बात। करोड़ों वर्षों का इतिहास विद्यमान है इतनी लम्बी आयु मानने के कारण भी हैं और वैज्ञानिकों के पास उसका हिसाब किताब भी है। जिन ईसाइयों ने निष्पक्ष होकर खोज की है उन्होंने कल्प की आयु करोड़ों नहीं अरबों वर्ष बताई है। आप की जानकारी के लिये कुछ प्रमाण दे रहा हूं—

प्रो० एस० न्यूको का कहना है जब पृथिवी सर्द होकर वनस्पति उगने के योग्य बनी उस समय से अब तक दो करोड़ वर्ष व्यतीत हुए हैं।

प्रो० हिलमारका कथनहै किजब पृथिवी ठंडी होकर वनस्पति उगने के योग्य बनी उस समय को अब तक दो करोड़ वर्ष व्यतीत हुए हैं।

प्रो० कराल कहते हैं कि पृथिवी को ठण्डा होने से वर्तमान अवस्था में आने तक सात

श्री कृष्णदत्त जी के व्याख्यानों की स्थिति

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के प्रधान मन्त्री

श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी का

—:** वक्तव्य **:—

प्रधानतया देहली नगर में तथा अन्यत्र कृष्णदत्त जी के व्याख्यान विशेष प्रकार से हो रहे हैं। उन व्याख्यानों की एक प्रचारक समिति भी देहली में है। एक पुस्तक भी प्रकाशित हुईहै। इन सब का कहना है कि यह कृष्णदत्त पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि हैं। खाट पर चित्त लेट कर समाधि लगा कर सुषुप्ति अवस्था में शिर हिलाते व्याख्यान देते हैं। वह वेद प्रवचनहैं और व्याख्यान से पूर्व जो उच्चारण करते हैं वे वेदमन्त्र हैं। मुझे इस सम्बन्ध में कुछ वक्तव्य देने की आवश्यकता न होती परन्तु जब कि उस व्यक्ति के सम्बन्ध में सार्वदेशिक धर्मार्यसभाके प्रधान और उपमन्त्री तथा दो अन्तरङ्गसदस्यों की सम्मतियां प्रकाशित की गई हैं जनता को यह भ्रम होना आवश्यक है कि सार्वदेशिक धर्मार्यसभा उसको सही मानती है। अतः मैंने अपने साथी धर्मार्यसभा के अधिकारियों और सदस्यों से बात की। उन सबका कहना यह है कि हमारा यह पक्ष नहीं है। केवल परिस्थिति को सामने रख कर विचारार्थ विषय प्रस्तुत किया है कि इस दिशा में विचार हो। मेरी सभा के सहायक मन्त्री श्री आचार्य राजेन्द्र नाथ जी शास्त्री जिनकी सम्मति विस्तार से प्रकाशित की गई है उनका स्पष्ट यह कहना है कि मेरे नामसे जो बातें छापी गई हैं वह मेरा सिद्ध या निर्णीत पक्ष नहीं है। धर्मार्यसभा के विद्वान् सब इस विषय पर शास्त्रदृष्टि से विचार कर महर्षिपक्ष जो निश्चय करे मुझे माननीय है। यही स्थिति प्रो० भीमसेन शास्त्री अन्तरङ्गसदस्य धर्मार्यसभा कीहै। श्रीआचार्य हरिदत्त जी शास्त्री और धर्मार्यसभा के प्रधान श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड के तो स्पष्ट ही केवल ये शब्द संमति में हैं कि इस पर विचार होना चाहिये इससे अधिक उन दोनों प्रतिष्ठित महानुभावों की कोई संमति में भी कुछ नहींहै अतः धर्मार्यसभा के सम्बन्ध में कोई मिथ्याभ्रान्ति आर्यजनता को नहीं होनी चाहिये। सार्वदेशिक धर्मार्यसभा का उस व्यक्ति के व्याख्यानों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

करोड़ साल का समय चाहिये।

सर विलियम टाम्स के विचार में यह अवधि दस करोड़ वर्ष होनी चाहिये।

प्रो० सहाफ कहते हैं कि पृथिवी को दो सहस्र डिग्री के तापमान से दूसरे दर्जे के तापमान तक पहुंचने में ३५ करोड़ वर्ष से कम का समय कदापि न लगा होगा।

प्रो० रेड ने अपने एक भाषण में कहा था कि जब पहले पहल यूरोप में वनस्पति उगी थी उसे अब तक ५० करोड़, वर्ष हुए होंगे।

प्रो० हक्सले ने अन्वेषण के पश्चात् यह सिद्ध कर दिया है कि जब से संसार वनस्पति उगनी शुरू हुई उस समय से लेकर आज तक एक अरब वर्ष व्यतीत हुए हैं।

(मस्ताना जोगी उर्दू अगस्त १६४२ के आधार पर)

सर रिचर्ड लिविंगस्टोन ने अपने एक निबन्ध में लिखा है—

"New knowledge in Geology proved that it (earth) was not created some 5,000 years ago but has existed for millions of centuries," (क्रमशः)

❀

श्रीकृष्ण के १०८ पटरानियां नहीं थी। यह बात अखण्डनीय है। हमें प्रसन्नता है कि इतनी बड़ी पोथी में आपने एक बात तो ठीक कही। इसके लिए मैं आपको साधुवाद देता हूं। परन्तु आगे आपने पुनः बेतुकी बात लिख दी कि श्रीकृष्ण ने महाभारत का युद्ध भी नहीं कराया था। महाभारत का युद्ध यदि श्रीकृष्ण ने नहीं कराया तो क्या दादा लेखराज ने कराया था ?

अब एक और विचित्र मान्यता देखिये—

"निर्वाणधाम में निवास ही मुक्ति है।मुक्ति कल्प के अन्त में होती है। अभी तक कोई भी मनुष्य मुक्त नहीं हुआ। मनुष्य मनुष्य को मुक्ति या जीवन मुक्ति नहीं दे सकता।"

(सच्ची गीता पृष्ठ १५५)

उस समय में पाप होता ही नहीं था। ये सारी बातें आप ने ही अपनी गीता में लिखी हैं। ऐसे शुद्ध पवित्र किसी व्यक्ति की मुक्ति क्यों नहीं हुई ?

यदि मुक्ति कल्प के अन्त में होगी तो आपकी मान्यता के अनुसार जिन व्यक्तियों को मरे हुए अब चार चार और पांच पांच हजार वर्ष हो गये हैं वे इस समय कहां पड़े हैं। क्या मुसलमानों की भांति वे 'दौरा सुपुर्द' हैं। यदि कल्प के अन्त में मुक्तिहोगीतोइससमयतोआप के अनुसार सारे ही व्यक्ति दुराचारी और पापी होते हैं, वे सभी तमोगुणी हैं क्या कल्प के अन्त में सभी की मुक्ति हो जायेगी ? यदि सचमुच ऐसा ही है तब तो ऐसा शिव जो दादा लेखराज

ब्रह्माकुमारी मत दर्पण

[ब्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी]

गतांक से आगे

समीक्षा—मुक्ति का अर्थ है छूटना। जब आप ने एक मनुष्य को एक लोक से हटा कर दूसरे में बन्दी बना दिया तो मुक्ति कहाँ हुई ? और फिर यह निर्वाणधाम कहाँ है ? किस शास्त्र में इसका वर्णन है ? यह कितनी दूर है ? कहाँ स्थित है ? आपका इतिहास भूगोल गणित आदि सभी विचित्र है। कृपया बताइये कौन से इतिहास या भूगोल में इसका वर्णन है जिससे हम भी पढ़ सकें ?

मुक्ति कल्प के अन्त में होती है यह आपको किसने बता दिया ? आपके ही मतानुसार श्री सीता श्री राम,श्री राधे श्री कृष्ण ये सब पुण्यात्मा और धर्मात्मा थे। आपके ही 'आदि सनातन देवी देवता धर्म' के थे। २५०० हजार वर्ष तक जो व्यक्ति उत्पन्न हुए वे सभी सतोगुणी थे।

के तन में अवतरित हो रहा है बड़ा ही पक्षपाती, पापी और अन्यायी है जो श्रेष्ठों को मुक्ति न देकर दुष्टों को मुक्त करता है।

जब आप स्वयं ही स्वीकार करते हैं कि मनुष्य मनुष्य को मुक्ति नहीं दे सकता तो फिर तुम भोले लोगों को क्यों जाल में फंसा रहे हो। कुछ तो ईश्वर से डरो और अब तो अपने पापों का प्रायश्चित्त कर लो।

पाठकगण ! यहां तक हमने ब्रह्माकुमारी संस्था का परिचय देकर इनके प्रमुख सिद्धान्तों और मान्यताओं की समालोचना की है। अब हम इनकी पुस्तकों के उद्धरण दे देकर उन सदंर्भों की समालोचना करेंगे जिससे पाठकों को ज्ञात हो जाये कि इनकी पुस्तकों में कैसी अनर्गल और बिना सिर पैर की बातें भरी हुई हैं।

प्रमाण:—"यह तो सिद्ध है कि इसलाम धर्म इब्राहीम ने, मुसलमान धर्म मुहम्मद ने, ईसाई धर्म ईसा ने, बुद्ध धर्म बुद्ध ने और इस प्रकार अन्य धर्म अन्य अन्य मनुष्यों ने स्थापित किये।"

(सच्ची गीता, पृष्ठ २)

समीक्षा—ईसाई धर्म ईसा ने और बौद्ध धर्म बुद्ध ने स्थापित किया यह तो ठीक है परन्तु इसलाम धर्म और मुसलमान धर्म इब्राहीम और मोहम्मद ने स्थापित किया यह आप की नई खोज है। दादा जी! इसलाम धर्म और मुसलमान धर्म में क्या अन्तर है यह आपने कहीं भी स्पष्ट नहीं किया। इससे यह तो पता लग गया कि आपको इतिहास का तनिक भी ज्ञान नहीं है। ये तो मत हैं इन्हें धर्म कहना भी भूल है। एक बात और यह प्रकरण अधूरा रह गया। इसमें यदि आप इतना और लिख देते कि ब्रह्माकुमारी मत दादा लेखराज ने स्थापित किया तो प्रकरण पूरा हो जाता। खैर कोई बात नहीं। मनुष्य से भूल हो ही जाती है। अगले संस्करण में सुधार देना।

प्रमाण—"परन्तु मैं तो अशरीरी हूँ। मैं मनुष्यात्माओं की तरह जन्म मरण के चक्कर में नहीं आता।"

समीक्षा—दादा जी! अपनी धुन में मस्त लिखे चले जा रहे हो। आप को आगे पीछे का भी कुछ ज्ञान है? यहाँ आप अपने को अजन्मा बता रहे हो परन्तु अन्य स्थानों पर आप ने अवतार लेने की बात कही है, जो अजन्मा है उसका अवतार कैसा? जो अशरीरी है उसका शरीर कैसा? कोई बुद्धिमान् तो आप की इन परस्पर विरोधी बातों को मान नहीं सकता।

प्रमाण—'प्रिय वत्सो! शिव का अर्थ है मुक्ति दाता अथवा सद्गति दाता।" (पृष्ठ ७)

समीक्षा—यह है दादा जी का संस्कृत का ज्ञान! शिव शब्द संस्कृत की 'शिव कल्याणे' धातु से बनता है। इसका अर्थ मंगलदाता और कल्याणकर्ता है मुक्ति दाता नहीं। कमाल तो यह है कि आगे चलकर स्वयं दादा जी ने इसका अर्थ निस्वार्थ कल्याणकारी माना है।

प्रमाण—"अब क्योंकि मैं ही (१) ज्ञान का सागर (२) सर्वशक्तिमान् (३) सभी गुणों तथा सुखों का अखुट भण्डार और (४) निष्पक्ष तथा सम्पूर्ण अनासक्त तथा (५) सभी मनुष्य आत्माओं रूपी सन्तान के कल्याण की प्रेरणा से युक्त (६) स्वयं त्रिलोकी का नाथ, स्वाधीन हूँ अतः एक मैं ही सभी का कल्याणकारी हूँ।"

आगे पुनः कहते हैं—

"मुझे ही विश्वेश्वर नाथ, चक्रवर्तीश्वर और पार्थेश्वर भी कहते हैं क्योंकि मैं ही सृष्टि का मालिक हूँ और पालन करने वाला, चक्रवर्ती राजाओं का भी ईश्वर अर्थात् राज्य भाग्य देने वाला हूँ।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ७)

समीक्षा—इसे प्रमत्त प्रलाप के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? यह तो अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना है। आप अपने को कुछ भी समझते रहें परन्तु आप कितने पानी में हैं, आप का ज्ञान और शक्ति कितनी है यह तो इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर सब पर प्रकट हो जायेगी। आप विश्वेश्वर और चक्रवर्तीश्वर तो नहीं परन्तु ढोंगेश्वर और पाखण्डेश्वर अवश्य ही कहे जा सकते हैं।

प्रमाण—"जिस वस्तु का नाम है, उसका रूप भी अवश्य होगा। किसी वस्तु का रूप स्थूल आँखों से दिखाई न देता हो यह तो हो सकता है, परन्तु किसी का अस्तित्व हो पर रूप हो ही न—यह बात असम्भव है।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ६)

समीक्षा—यह है दादा लेखराज का पदार्थ विज्ञान। इसी ज्ञान के आधार पर अपने को ज्ञान

का सागर कहते हैं। दादा जी! संसार में ऐसे अनेक पदार्थ हैं जिनका नाम तो है परन्तु रूप कोई नहीं। आप की जानकारी के लिये कुछ गिना देता हूँ। हवा का नाम तो आप ने सुना होगा क्या उसकी कोई शक्ल है? इसी प्रकार आकाश, भूख, प्यास, गर्मी, सर्दी, दर्द, दुःख, सुख, दया, उदारता आदि सैंकड़ों नाम गिनाये जा सकते हैं। जिन पदार्थों का अस्तित्व होता है उनका रूप भी होता है तो कृपया इनका रूप बताइये नहीं तो आपका दावा झूठा है।

प्रमाणः—सत्युग का वर्णन करते हुए आप कहते हैं—

"उस युग में कोई बच्चा जन्म लेने पर रोता नहीं था।" (पृष्ठ ३१)

समीक्षा—यह बात सृष्टि नियम के विरुद्ध है। कभी भी कोई समय ऐसा नहीं था और न आगे होगा जब बच्चा जन्म ले और रोये नहीं। हां एक बात सम्भव हो सकती है, यदि मरा हुआ बच्चा उत्पन्न हो तो वह नहीं रोता। तो क्या सतयुग में सब मरे हुए बच्चे पैदा हुआ करते थे?

प्रमाण—"उस युग में वर और वधू का गृहस्थ जीवन भी सर्वथा पवित्र था। वे दोनों इन्द्रिय जीत होते थे। कामवासना तो उस काल में संकल्प मात्र भी नहीं थी। सन्तानोत्पत्ति भी आत्मबल द्वारा आवाहन से, अर्थात् योगबल द्वारा होती थी। (पृष्ठ ३२)

समीक्षा—इसे चण्डू खाने की गप्प के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? दादा जी! आप बिना प्रमाण के बात करते हैं। किसी इतिहास से कोई प्रमाण दीजिये, अन्यथा आज के वैज्ञानिक युग में आप के अन्धश्रद्धालु चेलों को छोड़कर कोई विश्वास नहीं करेगा।

प्रमाण—"कलियुग के अन्त में, अन्तिम जन्म में, सभी मनुष्यात्मएं तमोप्रधान दुःखी, अशान्त, अपवित्र, आसुरी, धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट, योगभ्रष्ट और हिंसक होती हैं। वर्त्तमान समय में सभी मनुष्यों की यही स्थिति है।"

समीक्षा—आप की मान्यता के अनुसार कलियुग में यदि सारे ही लोग धर्मभ्रष्ट और अपवित्र होते हैं तो जिस वृद्ध तन में आपने प्रवेश किया वह भी भ्रष्ट ही होगा और इस प्रकार आप में उपर्युक्त सारे दूषण आ गये। आप औरों के लिये गड्ढा खोद रहे थे परन्तु स्वयं कुएं में गिर पड़े।

प्रमाण—"मन, बुद्धि, चित्त इत्यादि आत्मा से अलग नहीं है।"

(सच्ची गीता, पृष्ठ २८)

समीक्षा—दादा जी यहाँ भी आप गलती खा गये। सच्ची बात तो यही है कि मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार आत्मा से अलग हैं। आगे चलकर आपका यह मानना कि "मन प्राकृतिक नहीं है" भी अशुद्ध है। मन प्राकृतिक है, भौतिक है, आत्मा अभौतिक है। जिस गीता के सम्बन्ध में आप यह घोषणा करते हैं कि इसका ज्ञान मैंने ही दिया था श्रीकृष्ण ने नहीं वह भी आपकी बात का समर्थन नहीं करती वहाँ तो स्पष्ट उल्लेख है—

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥
(गीता० ३।४२)

अर्थात् शरीर से परे इन्द्रियाँ हैं, इन्द्रियों से परे मन है और मन से परे बुद्धि है तथा जो बुद्धि से भी अत्यन्त परे है वह आत्मा है।

कहिये! अब कौन सी बात को ठीक मानें।

प्रमाणः—"परन्तु गंगा का वास्तविक परिचय न होने के कारण आज भारतवासी हरिद्वार नामक नगर के पास से, ब्रह्म कुण्ड के निकट

से बहती हुई जो नदी जाती है, उसे ही शिव से निकली हुई गंगा समझते हैं।"

(सच्ची गीता, पृष्ठ ४७)

समीक्षा:—आप को किसी बात का पता हो या न हो आप अपनी टाँग अवश्य अड़ाते हैं। यदि आप को इतिहास और भूगोल का ज्ञान होता तो यह बात कदापि नहीं कहते। हिमालय का एक नाम हर भी है। हरद्वार से हिमालय का मार्ग आरम्भ होता है इस लिये इसे हरद्वार कहते हैं। हरिद्वार की कल्पना बहुत पीछे हुई। हर शिव जी का ही नाम है। अतः गंगा शिव से ही निकली है। इसमें सन्देह ही क्यों?

प्रमाण:—अर्जुन भी रूपकीय शब्द है जो कि वास्तव में ब्रह्मा का पर्यायवाची है।"

आगे फिर लिखा है—

वत्सो! अर्जुन वास्तव में लाक्षणिक नाम है। अर्जुन का अर्थ है शुद्ध व पवित्र रहने के लक्ष्य वाला रूहानी योद्धा। अतः श्वेत वस्त्र धारी ज्ञानबाणों द्वारा माया से युद्ध करने में कुशल, ब्रह्मा ही को अर्जुन भी कहना यथार्थ है।" (सच्ची गीता, पृष्ठ ५४)

समीक्षा:—दादा जी! यह विचित्र अर्थ आप की खोपड़ी से निकला है या आप की देह में 'मैकाले' बोल रहा है? यदि किसी इतिहास या कोष में इसका वर्णन हो तो उस का उल्लेख कीजिये। वैसे आपकी इस नई सूझ की दाद अवश्य देनी पड़ेगी।

प्रमाण:—'वत्सो! यदि आप से कोई पूछे कि—'आप का गुरु कहाँ है, हमको उसके दर्शन कराओ' तो उसको कहो कि—"हमारा गुरु तो सूर्य चाँद और तारागण से भी पार निर्वाणधाम में रहता है, वहाँ से ही वह ब्रह्मा तन में आता है। उसे इन स्थूल और विकारी आँखों से नहीं देखा जा सकता।" (सच्ची गीता, पृष्ठ ५८)

समीक्षा:—गुरु निर्वाण धाम में रहता है यह तो एक व्यर्थ की कल्पना है। जिस प्रकार मुसलमानों ने जन्नत और ईसाइयों ने हैवन की कल्पना की इस प्रकार से दादा लेखराज ने भी निर्वाणधाम की कल्पना कर ली। वस्तुतः दादा लेखराज कभी आबू पर्वत पर रहते हैं और कभी देहली के राजौरी गार्डन में। दादा लेखराज साकार है अतः कोई भी व्यक्ति उक्त स्थान पर जाकर उसे देख सकता है।

प्रमाण:—"भारत ही एक ऐसा निराला देश है जिसको मातृभूमि (Mother Land) के नाम से भी याद किया जाता है।"

(सच्ची गीता, पृष्ठ ७२)

समीक्षा—आपकी यह धारणा बिल्कुल गलत है। इंगलैण्ड, फ्राँस, अमेरिका, चीन, जापान तथा रूस सभी देशों के लोग अपने भूखण्ड को मातृभूमि कहते हैं।

प्रमाण—तभी तो गीता में मेरे महा वाक्य हैं कि जब जब धर्म की ग्लानि होती है तब तब मैं भारत में अवतरित होता हूँ।

समीक्षा:—गीता में भारत शब्द सम्बोधन है और अर्जुन के लिए प्रयुक्त हुआ है। परन्तु संस्कृत शून्य दादा जी ने इस का अर्थ भारतवर्ष कर दिया है। आप की पोप लीला भारत जैसे देश में ही चल सकती है। यदि कहीं पाश्चात्य देशों में आपका जन्म होता तो जेल में डाल दिये जाते।

प्रमाण:—मुक्ति के लिये पुरुषार्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

(सच्ची गीता, पृष्ठ ९२)

समीक्षा:—मानव जीवन का लक्ष्य मुक्ति प्राप्ति है परन्तु दादा जी कहते हैं मुक्ति के लिये पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं है? कैसा उत्तम ज्ञान है? ओ लेखराज के चुंगल में फंसने वाले लोगो! जिस मुक्ति के लिए आप लेखराज के पास जाते हैं वह तो उसे व्यर्थ

श्रीयुत डा० राजेन्द्रप्रसाद जी

जन्म — ३-१२-१८८४
निधन— २८-२-१९६३

एक बार गांधी जी ने कहा था कम से कम एक तो ऐसा व्यक्ति होना ही चाहिए जिसको जब विष पीने के लिए मैं दूं तो वह झिझके नहीं, और वह व्यक्ति डा० राजेन्द्रप्रसाद है।"

जिस पुरुष को गांधी जी ने अपना अन्यतम साथी चुना था उसको भारत के गण तंत्र का उच्चतम पद प्रदान किया जाना सर्वथा उपयुक्त था।

डा० राजेन्द्रप्रसाद ने निरंतर १२ वर्ष तक राष्ट्रपति के रूप में बड़ी योग्यता के साथ देश की सेवा की। ये १२ वर्ष भारत के इतिहास में उतार-चढ़ाव के वर्ष रहे।

गांधी जी के अनन्य भक्त डा० राजेन्द्रप्रसाद को सभी लोग प्रेम और आदर की दृष्टि से देखते थे केवल इसलिए नहीं कि वे महान् राजनीतिज्ञ थे या विशेष पांडित्य या योग्यता से सम्पन्न थे वरन् इसलिए कि वे विनम्रता, सत्यता और सज्जनता की प्रतिमूर्ति थे। बचपन से ही वे अध्ययन शील और अनेक विषयों में निष्णात थे। वे कई भाषाएं जानते थे जिनमें सुगमता से बोल और लिख सकते थे। उन्होंने अपनी विद्वत्ता वा अपनी विशेष क्षमताओं का प्रदर्शन कभी नहीं किया। वे विद्यार्थी के रूप में बंगाल में सर्वोपरि रहे जहां उन दिनों बौद्धिक प्रतिभा और सफलताओं के लिए बिहारी (बिहार के) लोग उपयुक्त न समझे जाते थे। परन्तु डा० राजेन्द्रप्रसाद ने इस मान्यता को झुठला दिया था। उनका आत्म-चरित्र हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है परन्तु उस आत्म चरित्र के लिए उन्होंने जिस भाषा का चुनाव किया उससे यह शिकायत

समझता है अतः सावधान इसके जाल में मत फंसो।

प्रमाणः—"विश्व के तीनों कालों का इतिहास और भूगोल (Geography) का संक्षेप में ज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है, क्योंकि इस ज्ञान द्वारा मनुष्य यथार्थ पुरुषार्थ कर सकता है अन्य जो लौकिक विद्याएं हैं जैसे कि डाक्टरी, इञ्जनियरिंग, राजकारोबार की विद्या आदि उन्हें 'सर्वोत्तम नहीं कहा जा सकता।"

(सच्ची गीता, पृष्ठ ९६)

समीक्षाः—सर्वोत्तम विद्या तो आध्यात्मिक विद्या है जिससे इह लोक और परलोक दोनों सुधरते हैं। आपने इतिहास और भूगोल को सर्वोत्तम माना है परन्तु इन का भी आपको ज्ञान नहीं। विश्व के तीनों कालों के इतिहास और भूगोल का ज्ञान हो भी कैसे सकता है। इतिहास तो होता ही भूतकाल का है। इतिहास का अर्थ है इति+ह+आस=ऐसा था। क्या आप ने भविष्य का कोई इतिहास लिखा है। इतिहास और भूगोल से डाक्टरी और इञ्जनिरिंग आदि को निकृष्ट बताना भी अपने अज्ञान का परिचय देना है।

प्रमाणः—'बड़ों में भी सब से बड़ा कौन है जो सर्वोत्तम ज्ञान का सागर और त्रिकालदर्शी कहा जाता है। मेरे ही गुण भी सर्वोत्तम माने जाते हैं। इसलिये मुझे ही पुरुषोत्तम भी कहते हैं।"

(सच्ची गीता, पृष्ठ ९६)

समीक्षाः—सर्वोत्तम ज्ञान के हमने अनेक उदाहरण पिछले पृष्ठों में दिये हैं। पाठकों पर इस सर्वोत्तम ज्ञान के दाता और ज्ञान के सागर की पोल अच्छे प्रकार खुल गई होगी।

(क्रमशः)

❀

अब पाठकों को पुरुषोत्तम का अर्थ और बता दूं। पुरुषोत्तम की दो निरुक्तियाँ होती हैं। एक है "पुरुषेषु उत्तम इति पुरुषोत्तमः" यह उक्ति तो लेख-राज जैसे व्यक्ति पर जो पर स्त्रियों के साथ रमण करता है, उन्हें अपनी गोद में बिठाता है, उन्हें प्रसाद खिलाता है और उनके अधरामृत का पान करता है घट नहीं सकती। अतः हमें विवश होकर दूसरी निरुक्ति देखनी पड़ेगी। दूसरी निरुक्ति के अनुसार "पुरुषेषु ऊतस्तेषु उत्तम इति पुरुषोत्तम." इस निरुक्ति के अनुसार कम से कम मुझे उन्हें पुरुषोत्तम मानने में तनिक भी संकोच न होगा।

प्रमाणः—"मेरे ही ज्ञान द्वारा मनुष्य सर्वोत्तम पद को भी प्राप्त कर सकता है और व्यवहार तथा परमार्थ सिद्ध कर सकता है।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ९६)

प्रमाणः—'वत्सो! यज्ञ का अर्थ है देना, अथवा आहुति देना'।

(सच्ची गीता पृष्ठ १०७)

समीक्षा—पाठकगण अब तो आपको पूर्णरूप से निश्चय हो गया होगा कि दादा जी संस्कृत के बिल्कुल कोरे हैं। यज्ञ शब्द यज् धातु से बना है। यज् धातु के तीन प्रमुख अर्थ हैं देवपूजा, संगति करण और दान। अतः यज्ञ के भी ये ही अर्थ हुए। केवल देना अर्थ करना अपनी अज्ञानता ही प्रकट करना है।

प्रमाणः—मैं परलोक से अवतरित होता हूं और एक साधारण एवं वृद्ध मनुष्य के तन में प्रवेश करता हूं... ..इस प्रकार प्रवेश करने पर, ब्रह्मा के तन में दो आत्माएं होती हैं। एक तो स्वयं ब्रह्मा की आत्मा होती है और दूसरा मैं परमात्मा होता हूँ।

ब्रह्माकुमारी मत-दर्पण

[ब्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी]

गतांक से आगे

समीक्षाः—सर्वोत्तम पद तो क्या प्राप्त होगा हां नरक में गोते अवश्य खाने पड़ेंगे तथा संसार में बदनामी होगी वह अलग

प्रमाणः—'प्रभु प्राप्ति' के एक मात्र मार्ग का पूर्ण परिचयात्मक नाम हुआ—'सहज ज्ञानयोग-कर्मयोग-संन्यासयोग-राजयोग।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ९८)

समीक्षाः—इस लम्बे चौड़े नाम को देख कर हमें एक टूटा फूटा श्लोक स्मरण हो आया जो कदाचित् किसी ऐसे ही नायक के सम्बन्ध में लिखा गया है—

बड़ा धोता बड़ा पोथा पण्डिता पगड़ा बड़ा।
अक्षरं नैव जानाति लपोड़ शंखाय नमो नमः॥

समीक्षाः—एक शरीर में एक ही आत्मा का निवास हो सकता है दो आत्माओं का निवास कदापि नहीं हो सकता। यह केवल अपना पाखण्ड फैलाने का साधन है। इसे तथ्य नहीं कहा जा सकता। संसार के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा कि किसी मनुष्य में कभी दो आत्माएं एक साथ रही हों।

प्रमाणः—"श्रीमद्भगवद्गीता में बताया गया है कि गीता के भगवान् का जन्म रात्रि के घोर अन्धकारमय समय, जब कि सभी सो रहे थे, तब हुआ।" (सच्ची गीता पृष्ठ ११२)

समीक्षाः—भगवद्गीता में यह बात बिल्कुल नहीं लिखी। मैं दादा लेखराज तथा सभी ब्रह्मा-

कुमार और कुमारियों को चैलेञ्ज देता हूं यदि किसी में दम खम हैं तो यह बात गीता से निकाल कर दिखाये।

प्रमाणः—"प्रिय वत्सो ! जैसे मैं परमात्मा सभी मनुष्यात्माओं का पारलौकिक पिता हूं वैसे ही मेरे वाक्यों द्वारा रचित शास्त्र 'श्रीमद्भगवद् गीता' सभी शास्त्रों की माता पिता है।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ११५)

समीक्षा—आपको पिता मानता कौन है? क्या आप जबरदस्ती संसार के पिता बनना चाहते हैं? कोई मूर्ख ही आपको अपना पिता स्वीकार कर सकता है, बुद्धिमान् व्यक्ति तो आप से बात करना भी पसन्द नहीं करेंगे। रही आपकी 'गीता, मेरे विचारों में यह रद्दी की टोकरी में फेंकने योग्य है। सृष्टि-क्रम-विरुद्ध, इतिहास और विज्ञान के प्रतिकूल अनेक बातें इसमें भरी हुई हैं। आप अपने मुँह से कुछ भी कहते रहिये बुद्धिमान् तो आप की चिल्ल पौं को मान नहीं सकते।

प्रमाण—गीता सर्व प्राचीन धर्म ग्रन्थ है और उसकी रचना भी अन्य मतों के प्रकट होने से पूर्व हुई। (सच्ची गीता पृष्ठ ११६)

समीक्षा—आपकी यह बात भी मिथ्या है। सारे संसार के इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि ऋग्वेद ही संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ है। आपकी इन झूठी बातों को पढ़ पढ़ाकर आपके मनुष्य होने में भी सन्देह होता है और आप अपने को परमात्मा घोषित करते नहीं अघाते! क्या परमात्मा के पास झूठ बोलने, लोगों को धोखा देने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं है। प्रभो! ऐसे पाखण्डी परमात्माओं से संसार की रक्षा करो।

गांधी जी और दादा लेखराज

दादा जी ने गान्धी जी के सम्बन्ध में कई स्थानों पर अपने विचार प्रकट किये हैं। ये विचार बहुत ही महत्वपूर्ण और उपादेय हैं। कांगरेसियों को इनसे शिक्षा लेनी चाहिये। लीजिये सुनिये—

"यद्यपि महात्मा गांधी ने शास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता से प्रेरणा पाई और कुछ आध्यात्मिक बल भी प्राप्त किया तो भी वे राम राज्य की स्थापना न कर सके। वह साक्षात् मुक्त सर्वशक्तिमान् परमपिता से ज्ञान, पवित्रता और योग की शक्ति न पा सके, क्योंकि वे अभी सत्य की खोजना ही कर रहे थे। अर्थात् उन्होंने अभी मुक्त गीता के निराकार भगवान् को जाना ही नहीं था। इसलिए उन्होंने जो सिविल नाफरमानी, असहयोग, आमरण व्रत आदि आदि के रूप में हठयोग के जो तरीके अपनाए वे सभी मेरे ईश्वरीय ज्ञान और योग के विपरीत थे। इसलिए उनके जीवन काल में राम राज्य की इच्छा पूरी न हो सकी।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ११६)

आगे आप फिर लिखते हैं—

"महात्मा गान्धी जनता को विकारी से निर्विकारी अथवा रावण समान से राम समान नहीं बना सके, क्योंकि उन्हें सच्चे ज्ञान और योग का परिचय ही नहीं था।

(पृष्ठ ११६)

यहीं पर बस नहीं है और देखिये—

"महात्मा गान्धी तो स्वयं ही सम्पूर्णतया पवित्र न थे। जिस ज्ञान और योग द्वारा मैं मनुष्यों को मनोविकारों पर विजय प्राप्त करने योग्य बनाता हूँ, गांधी जी उससे तो परिचित ही न थे। इस कारण वे भारतवासियों के मन, वचन, कर्म अथवा व्यवहार तथा आचरणात्मक पवित्रता न ला सके।"

(सच्ची गीता पृष्ठ १२०)

समीक्षाः—ये हैं दादा लेखराज के गांधी जी के सम्बन्ध में विचार! आज कांगरेसियों की जो हार हो रही है उसका कारण भी यही प्रतीत होता है कि श्री नेहरू आदि ने दादा जी से ज्ञान नहीं लिया। गान्धी के चेलो! इन विचारों को पढ़ो और सोचो। क्या गान्धी सचमुच ऐसे ही थे?

गान्धी आदि की जयन्ति मनाना भी दादा लेखराज को अखरता है। वे लिखते हैं—

"भारतवासियों के धर्म विमुख और ईश्वर विमुख होने का एक प्रमाण यह है कि वे अन्य धर्म स्थापन करने वाले मनुष्यों के जन्म दिन को मनाने के लिए तो करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं परन्तु जिस निराकार परमात्मा (शिव) ने इस सृष्टि को तमोप्रधान से बदल सतोप्रधान अथवा दैवी स्थिति में लाया और जो हर कल्प (५००० वर्ष के बाद) सम्पूर्ण पवित्र, सुख तथा शान्ति की बरसा देकर भारत को मोहताज से सरताज और सच्चा स्वराज्य बनाता है उस (शिव) की सच्ची बरसी (शिव जयन्ति) नहीं मनाते।'

(सच्ची गीता पृष्ठ १२०)

समीक्षाः—दादा जी के शब्दों में एक कसक, टीस, वेदना और पीड़ा है कि मेरी बरसी क्यों नहीं मनाई जाती। मुझे दादा जी से सहानुभूति है परन्तु क्या करूं मैं भी इस विषय में कुछ कर सकने में असमर्थ हूं। जयन्तियां उनकी मनाई जाती हैं जो इस धरा धाम पर उच्च और श्रेष्ठ कर्म करते हैं, जो लोगों को सन्मार्ग दिखाते हैं! संसार राम की पूजा करता है रावण को कोई नहीं पूजता। एक ओर आप लोगों के गृहस्थों को चौपट कर पति और पत्नी में फूट डालें, परस्त्रियों के साथ रमण करें और दूसरी ओर ये चाहें कि आपकी जयन्ति मनाई जाये? आपकी यह आशा दुराशा मात्र है। फिर आपके मतानुसार तो इस सृष्टि का ड्रामा घड़ी की सुई के अनुसार चलता है तब यह रोना धोना क्यों?

प्रमाण—"ऐसी परिस्थिति में मेरे प्रिय बच्चे कांगरेस पति गान्धी जी जो कार्य अधूरा छोड़ गये थे।"

(सच्ची गीता पृष्ठ १२५)

समीक्षाः—दादा जी की अवस्था गान्धी जी से कम है परन्तु आपका गान्धी जी को प्रिय बच्चा कह कर सम्बोधित करना अशिष्टता नहीं तो और क्या है? दादा जी आपके मतानुसार 'कलियुगी विकारी मनुष्य के नाम के साथ श्री लगाना तो एक दम अनुचित और उपहास योग्य है' परन्तु अपने से भी बड़े व्यक्तियों को प्रिय बच्चा कहना उचित और शिष्टता है। शिक्षा का कितना ऊंचा आदर्श है।

प्रमाण—मनुष्यात्माएं पशु योनि में जन्म नहीं ले सकतीं। इसी प्रकार पशु भी मनुष्य योनि में जन्म नहीं ले सकते क्योंकि ऐसा नियम ही नहीं है।

(सच्ची गीता पृष्ठ १२६)

समीक्षा—यह नियम आपके घर का है या किसी शास्त्र का? यदि किसी शास्त्र का है तो बतलाइये कौन से शास्त्र में लिखा है? मनुष्य आत्माएं अपने कर्मों के अनुसार पशु योनि की तो बात ही क्या कीट पतंग और वृक्ष योनि में भी जाती हैं। यदि यह माना जाये कि मनुष्य आत्मा पशु योनि में नहीं जाती तो हम पूछना चाहते हैं कि कुछ आत्माओं को पशु योनि और कुछ को मनुष्य योनि क्यों मिली। यदि बिना कारण ही कुछ आत्माओं को मनुष्य योनि मिल गई और कुछ को पशु योनि तो फिर ऐसा परमात्मा अन्यायी और पक्षपाती होगा। क्या ब्रह्माकुमारियों का परमात्मा ऐसा ही है?

आपकी यह मान्यता कि मनुष्यात्मा ८४ लाख योनिया धारण नहीं करती (पृष्ठ १२६) भी सर्वथा मिथ्या है। यह तो आवश्यक नहीं कि मनुष्यात्मा क्रमशः ८४ लाख योनियों में अवश्य ही जायेगी परन्तु इतना तो निश्चित है कि कर्मानुसार वह किसी भी योनि में जा सकती है। मनुष्य कर्म तो खोटे करता रहे, झूठ भी बोले, कम भी तोले, कामी, क्रोधी और व्यसनी भी हो और वह मनुष्य जन्म ही पाता रहे यह बात अशुद्ध है।

प्रमाणः—आप ही नहीं बल्कि आज कल इस धर्म के सभी लोग अपना परिचय देते समय स्वयं को हिन्दू कहते हैं। परन्तु स्पष्ट है कि 'हिन्दू' शब्द तो सिन्धु नदी अथवा हिन्दुस्तान देश के नाम के आधार पर पड़ा है। (सच्ची गीता पृष्ठ १२०)

समीक्षाः—आपको इतिहास का ठीक ज्ञान तो है नहीं और आप बार बार इतिहास की बात कहते हैं और अशुद्ध कहते हैं। यदि हिन्दू नाम सिन्धु नदी के आधार पर पड़ा है तो सिन्धु नदी को हिन्दु क्यों नहीं कहते ? क्या आपके पास कोई उत्तर है ? यह नाम हिन्दुस्तान देश के आधार पर भी नहीं पड़ा। वास्तविकता तो यह है कि हिन्दू नाम मुसलमानों का दिया हुआ है। उर्दू कोष में हिन्दू का अर्थ चोर, डाकू और काला आदमी है। इस घृणा सूचक नाम को अब लोगों ने अपना लिया यह सचमुच दुःख की बात है। हां आपकी यह बात ठीक है कि —"हिन्दू शब्द से प्राचीनता और दैवी मर्यादा की खुशबू नहीं आती।" यह भी सत्य है कि "हिन्दू शब्द कोई हृदय को आकर्षण करने वाला, प्राचीन परम्परा की याद दिलाने वाला और ... प्रोत्साहित करने वाला नहीं है।" "अच्छी बात बालक से भी ले लेनी चाहिये" इस उक्ति के अनुसार हमें इस हिन्दू नाम को तिलांजलि देकर अपने प्राचीन आर्य नाम को अपनाना चाहिये।

प्रमाणः—"अब यदि मनुष्य शीतल स्वभाव से तथा निष्पक्ष भाव से विचार करें तो इस बात को अवश्य स्वीकार करेंगे कि भारत का इतिहास ५००० वर्ष से अधिक पुराना नहीं है। आज तक किसी भी इतिहासकार (Historian) ने, ईसा से ३००० वर्ष से अधिक पूर्व के समय का प्रमाणित इतिहास नहीं लिखा। इतिहासकार उस समय को "प्राक् इतिहास काल" (Pre-historic-era) कह कर छोड़ देते हैं।

(सच्ची गीता पृष्ठ १३५)

समीक्षाः—यह है दादा लेखराज की हिन्दी का नमूना। प्रथम वाक्य में उन्हें एक वचन और बहुवचन का ही ध्यान नहीं है। हांके जा रहे हैं। प्रामाणिक के स्थान पर आपने 'प्रमाणित' लिखा है और प्रागैतिहास को 'प्राक् इतिहास' लिखा है। दादा जी आप कुमारियों के साथ रंग रलियों में ही रहते हैं या कभी कुछ पढ़ते लिखते भी हैं। यदि आपने कुछ भी स्वाध्याय किया होता तो इस प्रकार की अनर्गल बातें न करते। इस समय श्री पं० भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर इतिहास के माने हुए विद्वान् हैं इन्होंने लगभग दस हजार वर्ष पूर्व तक का इतिहास लिखा है। उनके इतिहास को मंगाकर पढ़िये तो आपका भ्रम दूर हो जायगा। प्रागैतिहासिक काल की कल्पना भी अशुद्ध है। आर्य सिद्धान्त प्रागैतिहासिक मानता ही नहीं।

प्रमाणः—मिथ्या ज्ञान अथवा अज्ञानता के कारण ही वे कह देते हैं कि श्री राम को लाखों वर्ष हो गये हैं। परन्तु वास्तव में त्रेता युगी श्रीराम को हुए तो केवल ३७५० वर्ष बीते हैं।

(सच्ची गीता पृष्ठ १३५)

समीक्षाः—आपकी यह धारणा भी सर्वथा मिथ्या है। श्री राम का समय ३७५० वर्ष बताना ही अज्ञानता है परन्तु आप अपनी अज्ञानता को दूसरों पर थोप रहे हैं। यह तो वही बात हुई कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। श्री राम के जन्म को लाखों नहीं इससे भी अधिक समय हो गया है। श्री राम को हुए एक करोड़ ८१ लाख ४८ हजार और ६१ वर्ष हुए हैं। इस समय का पूर्ण विवरण हम अपने रामायण के ग्रन्थ में देंगे।

प्रमाणः—"मैं तो सहज ज्ञान द्वारा, तथा दिव्य दृष्टि के वरदान द्वारा, अव्यक्त धामों की यात्रा कराता हूँ और बार बार साधना, हठ, तप, यज्ञ, कर्मकाण्ड जड़मूर्तियों की पूजा आदि से बचा देता हूँ।" (सच्ची गीता पृष्ठ १४१)

समीक्षाः—जड़ मूर्तियों की पूजा से छुड़ाना तो अच्छा है परन्तु तुम अपनी अनुचित पूजा कराते हो क्या यह उचित है ? यह तो ऐसा है जिसे एक गढ़े में से निकाल कर किसी को धकेल देना। आपने एक बुराई तो हटाई परन्तु उसके साथ आपने राधा स्वामियों की भांति यज्ञ तप और कर्मकाण्ड का भी सफाया कर दिया क्या यही सहज ज्ञान है ?

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

वैदिक ज्ञान प्रकाश

लेखक मास्टर 'शान्त'

प्रकाशक—आर्य युवक संघ १६५४ दरियागंज, दिल्ली

$\frac{२०\times३०}{३२}$ पृ० १२० मूल्य ५० नया पैसा।

इस पुस्तक में ईश्वर, जीव, प्रकृति, सृष्टि उत्पत्ति, वेद वा ज्ञान, धर्म,विद्या, अद्वैतवाद, देवता विज्ञान, प्रार्थना उपासना, योग, यज्ञ, मोक्ष, पुराण, वर्ण, आश्रम, विवाह, संस्कार, भक्ष्याभक्ष्य, आचार, अनाचार, राजनीति इन २२ शीर्षकों के अन्तर्गत आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों से सम्बद्ध जानने योग्य प्रायः सभी सामग्री प्रस्तुत कर दी गई है जिसका अध्ययन बड़ा लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

पुरुष-सूक्त

प्रथम संस्करण

(प्राणनाथ स्मृति ग्रन्थमाला) सं० १

प्रकाशक—श्री विश्वनाथ जी, अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग,आर्य समाज,दीवान हाल देहली

$\frac{२०\times३०}{१६}$ पृ० ६८ मूल्य ४० न० पै०

इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यजुर्वेद भाष्य के ३१ वें अध्याय में वर्णित पुरुष सूक्त का भाष्य अविकल रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुरुष सूक्त में परम पुरुष परमात्मा के गुणों तथा उसके कार्यों का वर्णन किया गया है। महर्षि दयानन्द के भाष्य में क्रम इस प्रकार है:—

[पृष्ठ ३० का शेष]

दी। उनका जीवन अत्यन्त सादा और अनुकरणीय रहा।

महात्मा हंसराज जी आर्य समाज के एक प्रमुख स्तम्भ थे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के संस्थापक और निर्माता थे। कालेज विभाग के आर्यसमाजों का संचालन सूत्र जीवन-पर्यन्त उनके सुदृढ़ हाथों में रहा। मलकानों की शुद्धि, गढ़वाल, बीकानेर के अकाल पीड़ितों की सहायता, काँगड़ा, क्वेटा और बिहार के भूकम्प पीड़ितों की सेवा, मलाबार में मुस्लिम आततायियों से पीड़ित और आतंकित हिन्दुओं की रक्षा आदि उनके कार्य सदैव स्मरणीय रहेंगे। उन्होंने आर्यों के लिए ५ सकारों (संध्या स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति, सेवा और सुदान) की व्यवस्था की। उन्होंनें महर्षि दयानन्द की अंग्रेजी जीवनी और धर्म-शिक्षा आदि की कई उत्तम पुस्तकें प्रदान कीं।

वे जीवन-पर्यन्त प्रकाश प्रदान करते रहे और अन्त में १५-११-१९३८ को महान् प्रकाश में विलीन हो गए।

❀

(पृष्ठ ३४ का शेष)

दिव्य दृष्टि तो आपके पास ही नहीं है दूसरों को क्या दोगे ?

समर्पण

प्रमाण:—जो मनुष्य तन, मन और धन सहित मेरे अर्पण है और उन्हें मेरे ही आदेश (Direction) के अनुसार जनता की ईश्वरीय सेवा में लगाता है, उसी को मैं पापों से मुक्त करता हूं। (सच्ची गीता पृष्ठ १४३)

समीक्षा:—मुक्ति का लालच देकर यह धन ऐंठने और व्यभिचार फैलाने का पाखण्ड है। दादा जी स्वयं मुक्त नहीं हो सकते, दूसरों को मुक्ति तो क्या देंगे।

—(क्रमशः)

समीक्षाः—इससे बढ़ कर आत्मप्रवञ्चना और क्या हो सकती है ? यह झूठा ढोंग है, सत्य का लेश भी नहीं तुम पतित पावन नहीं अपितु पवित्रों को पतित करने वाले हो। तुम ने कितने ही घरों को उजाड़ दिया। पति और पत्नी को अलग कर दिया कितनी ही देवियों से बलात्कार किया, कितनों के साथ छल कपट और धोखा किया फिर भी अपने को पतित पावन कहते हो तुमने गणिका तो एक भी नहीं तारी हां इसमें सन्देह नहीं कि तुमने कुलवालाओं को गणिका बना दिया। आप साधु और संन्यासियों का उद्धार तो क्या करोगे परन्तु यदि कुछ दिन किसी साधु की संगत में रह जाओ तो तुम्हारा उद्धार अवश्य हो जाएगा ?

अन्य मतावलम्बियों को गालियां

दादा जी अपने आपको परमात्मा (शिव) की वाणी से कैसे फूल झड़ रहे हैं। हो सकता है पाठकों को कहीं मेरी भाषा भी कठोर लगे परन्तु मैंने दादा जी की तरह गाली नहीं दी हैं। हां दादा जी के कारनामों के लिये कुछ विशेषण अवश्य लिखने पड़े हैं वे भी विवशता में और केवल सत्य को प्रकट करने के लिये।

योग की परिभाषा

प्रमाणः—"यदि किसी योग में शारीरिक क्रिया की आवश्यकता होती है, कोई प्राणायाम, विशेष आसन, शब्दोच्चारण इत्यादि करने पड़ते हैं तो उसे योग कहना भी भूल है।"

(सच्ची गीता पृष्ठ १६९)

समीक्षाः—दादा जी ! इस परिभाषा ने तो आपके योग पर भी पानी फेर दिया। आपके यहां भी तो आँखें लड़ानी पड़ती हैं और आंखें लड़ाने

ब्रह्माकुमारी मत-दर्पण

[ब्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी]

गतांक से आगे

बताते हैं परन्तु उनमें सहनशीलता का लेश भी नहीं है। उन्होंने अन्य मतावलम्बियों को अनेकों स्थान पर गालियां प्रदान की हैं और कटुवचनों का प्रयोग किया है। नमूने के तौर पर कुछ यहां लिखी जाती हैं-

"ये चित्र अन्धों को आरसी का काम देंगे।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ३

"मूर्ख लोगों ने यह उल्टा मत फैला कर कि सतयुग में भी दुःख और दैन्य होते हैं सब गड़बड़ घोटाला कर दिया है।"

(सच्ची गीता पृष्ठ ९९)

"अन्धे मनुष्य अन्धकार में ठोकरें ही खा रहे हैं।"

(पृष्ठ १५४)

समीक्षाः—पाठक गण ! आपने देखा दादा जी के लिये विशेष विशेष आसन में बैठना पड़ता है। यह तो वही बात हुई "गये थे रोजा छुड़ाने उलटी नमाज गले पड़ी।"

रामायण एक नाविल

प्रमाणः—"ऐसे समय न रावण जैसे दैत थे, ना बन्दर सेना थी, ना श्री रामचन्द्र भगवान् की स्त्री सीता चुराई गई थी और ना श्री रामचन्द्र भगवान् ने रावण दैत से युद्ध की थी। वास्तव में रामायण तो एक नाविल है, जिसमें १०१ प्रतिशत मनो मय गपशप डाल दी है।

(घोर कलह युग विनाश पृष्ठ १५

समीक्षाः—स्वार्थी मनुष्य स्वार्थ सिद्धि के लिये क्या कुछ नहीं कह सकता। यदि रामायण को

गप्प और नाविल न बताओ तो तुम्हारे जाल में कौन फसे। वस्तुतः आपने रामायण पढ़ा ही नहीं यदि पढ़ी होती तो ऐसी बात न कहते। आपके पास क्या प्रमाण हैं कि रामायण सच्ची घटना नहीं नाविल है। ऐसा लगता है लेखराज के शरीर में मेकाले की रूह घुस कर बोल रही है, लेखराज में इतनी अक्ल कहां ?

पाठकगण ! कहां तक समालोचना की जाये इनके ग्रन्थों में इस प्रकार की अनेक अवैदिक, सार-रहित, तथ्य हीन, वेबुनियाद, इतिहास विरुद्ध अनर्गल बातें भरी हुई हैं। यदि सारी पुस्तक की पूर्णरूपेण समालोचना की जाये तो सैकड़ों पृष्ठ लग जायें। बुद्धिमान् इतने से ही समझ लेंगे कि यह संस्था कैसी है।

आपबीती और जगबीती

अब हम इस संस्था के सम्बन्ध में कुछ आपबीती और जगबीती घटनाओं का वर्णन और करना चाहते हैं जिससे पाठकों को इनके ढोल की पोल का पूर्णरूपेण ज्ञान हो जाये। पहले मैं आपबीती घटना आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूं।

बात जून १९५९ की है। मैं एक विवाह संस्कार कराने बुलन्दशहर गया था। प्रातः आर्य समाज में व्याख्यान दिया। बहुत से बराती भी व्याख्यान सुनने के लिए आये थे। शाम को उन्हीं श्रोताओं में से एक ने ब्रह्माकुमारियों के सम्बन्ध में मेरे विचार पूछे। मैंने अपने विचार रखे तो वहां उपस्थित ब्रह्माकुमारियों के एक भक्त ने कहा— ये बातें गलत हैं। ब्रह्माकुमारियों का जीवन बड़ा ही शुद्ध और पवित्र है कभी वहां जाकर देखिये ! मैंने कहा अच्छी बात है जाकर भी देख लूंगा।

मैं ३ अथवा ५ अगस्त को अपने एक मित्र दर्शनलाल जी के साथ इनके कमला नगर स्थित कार्यालय में गया। जब हम ऊपर पहुंचे तो एक बोर्ड लगा हुआ था जिस पर उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी में लिखा था "बिना आज्ञा अन्दर जाना मना है।" हम इस बोर्ड की परवा किये बिना अन्दर प्रविष्ट हो गए। जब अन्दर कमरे में झांका तो क्या देखते हैं कि एक ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी एक दूसरे के अति निकट शायद एक दूसरे के आलिंगन और चुम्बन के लिये तैयारी कर रहे थे। हमारी पदचाप सुनते ही ब्रह्माकुमारी वहां से निकल कर भागी और ब्रह्माकुमार जी ने हम दोनों पर बरसना शुरू किया, "तुम क्यों आये हो ?" मैंने बड़ी नम्रता से कहा "योग सीखने।" उन्होंने फिर कहा, "आप अन्दर क्यों आये।" मैंने पुनः कह दिया "योग सीखने।" अब तो ब्रह्माकुमार और अकड़े कहने लगे बाहर "No admission" का बोर्ड लग रहा है, घण्टी भी लग रही है आप बिना पूछे क्यों घुसे ? आप लोगों को ऐटिकेट की छोटी बातें नहीं आती। हम दोनों मित्र गये तो जानबूझ कर ही थे परन्तु मैंने कहा "गलती हो गई क्षमा कीजिये, भविष्य में ध्यान रक्खेंगे।" क्षमा मांगने पर भी उनका पारा कम नहीं हुआ, और १०-१५ मिनट तक हमें उपदेश देते रहे। दूसरों को काम, क्रोध, और लोभ, मोह छोड़ने का उपदेश देने वाले ब्रह्माकुमार की इस अवस्था पर मैं और मेरा मित्र मन ही मन खूब हंसे। बाहर निकल कर भी हंसे।

लम्बा चौड़ा उपदेश देने के पश्चात् उन्होंने अपनी कापी में हमें नाम पता आदि लिखने के लिए कहा मैंने अपना नाम पता आदि लिख दिया परन्तु मेरे मित्र ने नहीं लिखा। मित्र तो फिर गये भी नहीं मैं पाँच दिन तक जाता रहा।

जो ब्रह्माकुमारियां पढ़ाती हैं उनके वस्त्र प्रायः तड़कीले भड़कीले श्वेत रेशम के होते हैं। आंखों में काजल अथवा सुर्मा लगाती हैं। सुर्मा बहुत अधिक मात्रा में। योगाभ्यासियों के जीवन में जो सादगी होनी चाहिए वह इस संस्था में मुझे नाम को भी दिखाई न दी। अस्तु। पाठ प्रारम्भ हुआ। एक दिन विष्णु के शंख, चक्र, गदा, पद्म की व्याख्या हुई

जो कुछ उन्होंने बताया उससे कहीं सुन्दर और श्रेष्ठ व्याख्या तो मैं स्वयं जानता था परन्तु सुनता रहा। दूसरे दिन चक्र से और तीसरे दिन वृक्ष से यह पढ़ाया कि सृष्टि कल्प की आयु ५००० वर्ष है।

जब ब्रह्मकुमारी चक्र को समझा रही थी तो उसने बताया ५०० वर्ष तक तो आदि सनातन देवी देवता मत था उसके पश्चात् इब्राहीम ने इस्लाम मत की स्थापना की फिर ईसाई और मुसलिम मत की स्थापना हुई। मैंने कहा, 'महाभारत के समय तक तो कोई मत था ही नहीं अब से ४५०० वर्ष पूर्व पारसी मत की स्थापना हुई थी उसका वर्णन आप के चक्र में नहीं है। ब्रह्माकुमारी को क्या पता कि पारसी भी कोई मत है। इसके भी कोई संस्थापक है और इनका भी कोई ग्रन्थ है। उन्हें तो दादा जी ने जो पढ़ा दिया बस वही उगल दिया। अतः प्रश्न सुन कर इधर उधर देखने लगी और कहने लगी—मुझे तो इस मत का पता नहीं परन्तु मैं जो पढ़ाती हूँ यह ज्ञान साक्षात् परमात्मा ने हमें दिया है और साथ ही मेरा २०-२२ वर्षका अपना अनुभव है। ब्रह्माकुमारी की आयु के सम्बन्ध में मुझे सन्देह हुआ मैंने पूछा, आपकी आयु कितनी है?" कहने लगी, "२८ वर्ष।" मैंने कहा, "तो क्या ६-७ वर्ष की आयु में ही साक्षात्कार हो गया था?"

एक दिन प्रसङ्ग वश गीता का श्लोक—"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत" आ गया। तो आपने भी दादा जी की भान्ति इसका अर्थ "जब जब भारत में धर्म की हानि होती है" किया। करती भी क्यों न दादा लेखराज की चेली जो हुई!

तीसरे दिन पढ़ाने के पश्चात् कहने लगी यह तो हमारा वाणी योग है। आप योगाभ्यास भी किया करो अब हमारा नैन योग शुरू होगा। जिस संस्था में ३ दिन में ही पर पुरुषों से नैन लड़ने लग जाये वहां कुछ समय के पश्चात्, योग होने लगे तो इस में आश्चर्य ही क्या? पांच दिन जाकर मैं फिर नहीं गया और नैन लड़ाने वाला योग तो मैं ने एक दिन भी नहीं किया। कारण जिस परिवार में जिस समाज धर्म में मेरा पालन पोषण हुआ वहाँ ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती।

अब आप जगबीती घटनाएं सुनिये।

मेरे एक मित्र श्री नरेन्द्रकुमार जी पर्याप्त समय तक ब्रह्माकुमारियों के यहां जाते रहे। एक दिन जब उनसे वार्तालाप हुआ तो कहने लगे—वहां भोजन बहुत बढ़िया मिलता है कभी खाया या नहीं? मैंने कहा—मैंने तो कभी नहीं खाया परन्तु ऐसा क्या भोजन मिलता है। वे कहने लगे—पहले मेरे सामने दूध लाया गया। दूध क्या था रबड़ी थी। बादाम पिस्ते और इलायचियां पड़ी हुई थीं। सुगन्ध की लपटें उठ रही थीं। मैंने अपने जीवन में ऐसा दूध पहले कभी नहीं पिया।" मैंने पूछा, "और कोई विशेषता?" तो उन्होंने बताया कि "जो परांठे मेरे समक्ष लाकर रक्खे गये उन में घी भी खूब था। एक परांठे में आधी छटांक से कम घी तो नहीं होगा।" मैंने आगे पूछा, "इनके सम्बन्ध में आप की सम्मति क्या है" तो वे कहने लगे "ऐसा उत्तम पौष्टिक भोजन करने वाले स्त्री पुरुष पाप के गढ़े में गिरने से बच नहीं सकते।"

यह बात बिल्कुल ठीक है। भर्तृहरि जी ने इस सम्बन्ध में बड़ा सुन्दर कहा है—

विश्वामित्रपराशरः प्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशना—
स्तेऽपि स्त्रीमुखपंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः।
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतं भुञ्जन्ति ये मानवाः,
तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम्॥
(शृंगार शतक ६६)

विश्वमित्र, पराशर आदि महर्षि जो पत्ते. जल, और वायु का सेवन करके रहते थे, वे भी स्त्रियों के कमल मुख की ओर देखकर मोह को प्राप्त हुए, फिर अन्न घी दूध और दही आदि व्यंजनों को खाने वाले मनुष्यों का इन्द्रियों को वश में करना ऐसा ही

कठिन है जैसे विन्ध्याचल पर्वत का सागर में तैरना।

ब्रह्माकुमारियों तथा कुमारों के भोजन के सम्बन्ध में यही बात हमारे मित्र श्री दर्शनलाल जी ने बताई थी। अस्तु।

श्री कमल एच० प्रेम बुलन्दशहर—

आप आजकल बुलन्दशहर में हैं और वहीं आप से मेरा वार्तालाप भी हुआ। १९५९ में आप कानपुर में ट्रेनिंग ले रहे थे और सितम्बर या अक्टूबर १९५९ में आप ब्रह्माकुमारियों के कानपुर सेंटर में गये। आप १५ दिन तक इस संस्था में जाते रहे। वहां प्रति बृहस्पतिवार को रामलीला होती थी जिसमें ब्रह्माकुमारियां युवकों को अपनी गोदी में उठाती थीं ऐसा उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से देखा था। १५ वें दिन ब्रह्माकुमारी ने आपको दिन में ढाई बजे बिल्कुल एकान्त में मिलने के लिये बुलाया। जब ये वहां पहुँचे तो वह ब्रह्माकुमारी इन्हें अन्दर एक विशेष कमरे में ले गई और एक कौच पर बैठा दिया और इनके बिल्कुल साथ ही वह भी बैठ गई। कमरे का ठाट बाट बड़ा ही रईसी था। अभी यह बैठे ही थे कि किसी ने कमरा खटखटाया। कमरा खोला तो बाहर एक स्त्री खड़ी हुई थी जिसकी गोद में एक बच्चा भी था। उसने ब्रह्माकुमारी से कहा कि मैं आपसे कुछ बातें करना चाहती हूं। वह स्त्री कहने लगी कि आप ने मेरे पति को मुझ से तो छीना ही परन्तु इस बच्चे को भी अनाथ कर दिया। वे इस से भी प्रेम नहीं करते। उस देवी ने अपनी करुणाजनक कहानी कुछ इस प्रकार बताई कि श्री प्रेम जी की आंखों में आंसू आ गये और उस दिन के पश्चात् वे फिर कभी उनके यहां नहीं गये।

...सिंह जी, विड़ला हायर सैकण्डरी स्कूल, देहली

आप को कुछ चित्र बनवाने के लिये आबू पर्वत पर बुलाया गया था। जब आप वहां पहुंचे तो जैसे दादालेखराज और स्त्री पुरुषों से आंखें लड़ाकर उन्हें सम्मोहित करते हैं इसी प्रकार दादा जी ने इन से आंखें लड़ानी शुरू की। मास्टर जी आंखें लड़ाते रहे। यह क्रिया पर्याप्त समय तक चलती रही और अन्त में दादा लेखराज ने हारकर आंखें नीची कर लीं और एक चीकू की फांक उठाकर उनके मुख में दी। इस घटना के पश्चात् मास्टर जी वहां चर्चा का विषय बन गये। लोग कहने लगे जितने देर इन्हें दृष्टिदान दिया गया इतनी देर तक दृष्टिदान और किसी को नहीं दिया गया। कुछ लोगों ने कहा, "मास्टर जी? दादा जी आप को इतनी देर दृष्टि-दान देते रहे आप को तो उनकी गोद में पड़ जाना चाहिये था।" मास्टर जी ने कहा, किसी दिन गोद में भी पड़ जाऊंगा।

सत्संग भवन के अतिरिक्त आबू पर्वत पर एक ओर ब्रह्माकुमार और कुमारियों को रहने के लिये कमरे बने हुए हैं। एक ओर दादा लेखराज के रहने के लिये भवन बना हुआ है। जहां दादा लेखराज रहते हैं एक डाक्टर भी रहते हैं तथा कुंवारी युवतियों के अतिरिक्त और कोई वहां नहीं जा सकता। मास्टर जी को वहां का हाल जानने की इच्छा हुई। एक दिन एक चित्र बना और बिना किसी के पूछे उसे दिखलाने के लिए दादा जी के प्राइवेट वार्ड की ओर चल दिये। वहां पहुँचकर उन्होंने कमरे की चिक उठाई तो विचित्र दृश्य दिखाई दिया:—

मास्टर जी को वहां देखकर एक स्त्री उठकर उधर आई आई और मास्टर जी से कहने लगी तुम यहां किससे पूछ कर आये? दादा जी तो इस

की कामवासनाओं को शान्त कर रहे थे। वे इसका कायाकल्प कर रहे थे। इस प्रकार तो इसकी मृत्यु हो सकती थी। इतनी ही देर में दादा जी भी सम्भल कर खड़े हो गये और उन्होंने भी वही बात दोहराई। हां इतना विशेष कहा कि हमें आप से कोई चित्र आदि नहीं बनवाना आप यहां से शीघ्र अति शीघ्र चले जाओ। यह है पाखण्ड की पराकाष्ठा !

कमला नगर के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री बलराम पाण्डेयः—

"ब्रह्माकुमारियों के ईश्वरीय ज्ञानविश्वविद्यालय में जाने वाले अधिकांश पूंजीपति हैं। किसी गरीब को इस संस्था में जाते हुए मैंने नहीं देखा और दरअसल यह गरीबों के लिये है भी नहीं। ब्रह्माकुमारियों का उपदेश देना और ब्रह्माकुमारों का ब्रह्माकुमारियों के लिये कामना कुछ अजीबसा लगता है।"

दिल्ली क्लाथ मिल्स के एक कर्मचारी—श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता।

"ब्रह्माकुमारियों की यह संस्था जनता को भगवान् के साक्षात्कार का झूठा आश्वासन देकर उन्हें ठगती है। भगवान् के अवतरण की घोषणा निराधार मात्र है। इस संस्था से समाज का कल्याण असम्भव है।"

करोल बाग आर्य समाज के उपमन्त्री—श्री दयालचन्द्र गुप्ता।

"एक बार मुझे इनके एक केन्द्र पर जाने का मौका मिला। मातेश्वरी सरस्वती पधारी हुई थीं। एक नवयुवती योग में बैठी हुई थी। फिल्म रिकार्ड "जादूगर सैंया छोड़ मेरी बहियां" (नागिन) बज रहा था। नवयुवती उठी और उठते ही उसने नृत्य आरम्भ कर दिया। रिकार्ड बजता रहा, वह नृत्य करती रही। फिर थक कर गिर गई। बत्तियां जल उठीं। रिकार्ड बन्द हो गया।

"योग के साथ फिल्मी गीत और नृत्य का क्या सम्बन्ध है यह मैं नहीं समझ पाया। नवयुवक एवं नवयुवतियों की उपस्थिति काफी थी। योग का तो एक बहाना था। वास्तव में वे फिल्मी गीत एवं नृत्य की ओर आकर्षित थे।

"नवयुवक और नवयुवतियों का एक साथ योग में बैठना जब कि कमरे में हल्की सी लाल रोशनी हो एवं फिल्मी गीत बज रहा हो—कुछ हास्यास्पद लगता है। लोगों का जीवन यहां बनता नहीं बिगड़ता है।" (हिन्दी टाइम्स १५-७-१९६१)

श्रीमती कुन्तेश कुमारी शर्मा हापुड़ लिखती हैं—

"कई समाचार पत्रों में कुछ ब्रह्माकुमारी समर्थकों ने हापुड़ के ब्रह्माकुमारी आंदोलन को अनुचित बताते हुए संस्था की धार्मिकता, पवित्रता, सादा जीवन व उच्च विचारधारा के गीत गाये हैं। मैं भी कुछ दिन तक इस ब्रह्माकुमारी संस्था के तथाकथित सत्संगों में भाग लेकर चिर कौमार्य का ज्ञान प्राप्त कर चुकी हूं। प्राप्त अनुभव के आधार पर मेरे विचार में इस संस्था से अधिक विलासिता-प्रेमी, व्यभिचारी और पाखण्डी संस्था और कोई हो नहीं सकती।

जब इनसे हापुड़ में मकान खाली कराया गया तो तीन प्रचारिकाओं के सामान से पांच बैल ठेले भरे गये। उसमें विलासिता की सभी सामग्री विद्यमान थी। इनके सत्सङ्गों में फिल्मी रिकार्डों के अश्लील गीतों पर कुमारी और कुमारों के सम्मिलित नृत्यों का (बाल डांस) होना, रंगीन विद्युत्प्रदीपों के मन्द प्रकाश में गुदगुदे गलीचों, कीमती दरियों, शुभ्र चांदनियों पर शृंगार प्रधान लीलाओं का आयोजन, अश्लीलता और व्यभिचार की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है ? मैं दावे के साथ कहती हूं कि ऐसी व्यभिचारी संस्था को किसी भी राज्य या नगर में प्रश्रय नहीं दिया जाना चाहिये।"

(दैनिक वीर अर्जुन, नई दिल्ली, २४ जून १९६१)

अंग्रेजी पत्र Flame की ब्रह्माकुमारी संख्या के सम्बन्ध में सम्मति—

"आध्यात्मिकता और ईश्वर भक्ति की ओट में आबू पर्वत पर स्थित एक धार्मिक संस्था जिसके पीछे सेक्स की भावना कार्य कर रही है, को गतिविधियों द्वारा सैकड़ों घरों को नष्ट किया जा रहा है।

ब्रह्माकुमारी के नाम से सर्वत्र फैली हुई यह संस्था विभाजन से पूर्व 'ओम् मण्डली' के नाम से शिकारपुर में कार्य कर रही थी। विभाजन के पश्चात् यह आबू पर्वत पर आ गई।

विभाजन इनके लिए एक वरदान सिद्ध हुआ क्योंकि अनेक पीड़ित नागरिकों की शिकायत पर शिकारपुरकी कोर्ट संस्था के लोगोंके विरुद्ध छानबीन कर रही थी। ये लोग न्याय के फंदे से बच कर भारत आ गये।

वे ही लोग अब ब्रह्माकुमार संस्था के नाम से रविवार को देहली तथा अन्य स्थानों पर सत्सङ्गों का आयोजन करते हैं।

इस संस्था के सदस्य जिनका गुरु आबू पर्वत पर रहता है, बड़ी चालाकी से नव युवतियों को अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें अपने पतियों को छोड़ने के लिये राजी कर लेते हैं और उन्हें अपनी संस्था में सम्मिलित कर लेते हैं जहां वे कामवासना की दास बन जाती हैं। अभी कुछ दिन पूर्व देहली के एक धार्मिक सज्जन की जवान स्त्री घर छोड़ कर भाग गई और इस संस्था में सम्मलित हो गई। संस्था वालों ने उसे ईश्वर दर्शन का विश्वास दिलाया है।

ऐसा कहा जाता है कि—१३ से १९ वर्ष की अवस्था की लड़कियां, सद्योविवाहित स्त्रियां, विधवाओं और अधिक वय की कुमारी लड़कियों को आध्यात्मिकता के नाम पर इस संस्था में आकर्षित किया जाता है

साथ ही भारत की राजधानी दिल्ली का सब्जी मण्डी स्थित ब्रह्माकुमारी कार्यालय का लाल बत्ती वाला कमरा आश्चर्य का द्योतक है। कहा जाता है जिस कमरे में 'सन्त' स्त्रियों को ईश्वरीय ज्ञान देता है तो कमरे के बाहर एक लाल बत्ती जली होतीहै। जिस समय यह कार्य होता है उस समय अन्य किसी को अन्दर जाने की आज्ञा नहीं होती। केवल 'सन्त गुरु' और ईश्वर की इच्छुक लड़की घण्टों उस में इकट्ठे रहते हैं यह भी कहा जाता है।

एक और बात जिसने अनेक व्यक्तियों को व्यग्र बना दिया है वह यह है कि देहली के आफिस में पर्याप्त रात गये तार आते हैं जिन में स्थानीय कार्यालय के लिये यह आदेश होता कि देश के अन्य भागों में भी सत्सग के लिये लड़कियां भेजिये।

एक विश्वस्त सूत्र से पता लगा कि "युवतियों में गुरु जी की, जो आबू पर्वत पर रहते हैं, प्रथम शिष्या बनने केलिए सदा ही एक भीषण प्रतियोगिता चलती रहती है।" प्रति ६ मास के पश्चात् इस विशेष पदवी के लिए एक नई लड़की चुनी जाती है यह भी कहा जाता है। ('Flame', २४ सितम्बर १९६०)

समाप्त